

# न्यूज़ बकेट

जनसंख्या नियंत्रण विल:  
वर्क की ज़हरत या फिर  
सियासत का नमूना? - 16

"ऑक्सीजन की कमी से नहीं  
हुई किड्सी की मौत", केंद्र  
और राज्य सरकारों का  
फर्जीबाड़ा! - 18



## लोकतंत्र पर पेगासस का हमला

कहीं आपके फोन पर भी तो नहीं है 'उसकी' नजर?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संसदीय क्षेत्र में  
बनाये अपने सपनों का आशीर्याना,  
सस्ते दामों में प्लॉट उपलब्ध!



## साक्षी इंफ्रासिटी प्रा० लि० क्रय विक्रय केंद्र

सारनाथ, भुल्लनपुर, केशरीपुर, रोहनिया, रामनगर, टेंगड़ामोड़, सामनेघाट,  
पटेलनगर, पहाड़िया में जमीन, मकान, प्लॉट व फॉर्महॉउस हेतु संम्पर्क करें।

बाबा शॉपिंग काम्प्लेक्स, बीएचयू रोड, लंका, वाराणसी  
ओम साई की कुटी, अकथा तिराहा, वाराणसी

मोबाइल नं. 7905288635, 0542-2581888

# भीतर

## न्यूज़ बकेट के कैमरे ने कैद की गांव की असल जिंदगी!

गांव से जिला बनता है, जिले से राज्य और राज्य से देश कहा जाता है कि गांव देश की अर्थव्यवस्था की टीढ़ है। अबी भी भारत की 70 फीसदी आबादी गांव में रहती है। पढ़ें पूरी खबर, **पेज नं. 21 पर...**



ममता कुलकर्णी से लेकर शाइनी आहुजा तक, इन फिल्म टार्स से हट किसी को बहुत उम्मीदें थीं। जब इन सेलेब्स ने फिल्मी दुनिया में कदम रखे तो अपने धमाकेदार फिल्मी सफर से सबको इम्प्रेस कर दिया था। पढ़ें पूरी खबर, **पेज नं. 23 पर...**

## रातोंरात तबाह हुआ 6 सुपरस्टार्स का करियर! कहीं छोटी सी भूल तो कहीं हादसे ने करवाया पैकअप

## जिस गोल्ड मेडल को जीतने ओलिंपिक में दुनियाभर के एथलीट जुटे हैं, उसमें गोल्ड है भी या नहीं?



ठोक्यो ओलिंपिक भारत के लिए बहुत खास रहने वाला है। पहले ही दिन मीराबाई चानू ने वेट लिफ्टिंग में सिल्वर मेडल जीतकर भारत के ओलिंपिक अभियान को बेहतीन थळआत दी है। पढ़ें पूरी खबर, **पेज नं. 32 पर...**

संपादकीय.....	04
कवर स्टोरी.....	05-08
विचार.....	09-15
मुद्रा.....	16-20
स्पेशल रिपोर्ट.....	21-22
मनोरंजन.....	23-26
साक्षात्कार.....	27-28
रिपोर्ट.....	29-30
खेल जगत.....	31-32
टेक ज्ञान .....	33-34
धार्मिक.....	35-36
राशिफल.....	37
न्यूज़ हेडलाइंस.....	38-45
टाइम-पास.....	46

# न्यूज़ बकेट

www.newsbucket.in

अगस्त 2021

वर्ष 2

अंक 7

### संस्थापक संरक्षक

संरक्षक : मिथिलेश पटेल

प्रधान संपादक : राजू श्रीवास्तव

वरिष्ठ पत्रकार : रमेश उपाध्याय

पत्रकार : विकास कुमार श्रीवास्तव

फोटो एडिटर : सुधीर कुमार गुप्ता

छायाकार : धीरेन्द्र प्रताप

### कानूनी सलाहकार

भूपेश पाठक : अधिवक्ता

### प्रधान कार्यालय (FIVE ALPHABETS)

बी - 31/19, आर बाबा शॉपिंग

काम्लेक्स लंका, वाराणसी।

E-Mail : m@fivealphabets.com

मो : 9415147110, 8574479280, 9807505429

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक मिथिलेश पटेल एवं संपादक राजू श्रीवास्तव ने गाँगल प्रिंटिंग वर्कर्स - C 25/2 राम कटोरा, चेतगंज, वाराणसी से मुद्रित कराकर बी - 31 /19, आर बाबा शॉपिंग काम्लेक्स लंका, वाराणसी से प्रकाशित किया।

**R.N.I.-UPHIN/2020/78911**

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखक के हैं। उसमें संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त विवादों का क्षेत्र वाराणसी न्यायालय होगा।

भारत में कई शिव मंदिर और शिव धाम हैं। लेकिन 12 ज्योतिर्लिंगों का महत्व सबसे अधिक है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इन 12 ज्योतिर्लिंगों में ज्योति दृप्ति वेद वेद भगवान शिव स्वयं विराजमान हैं। पढ़ें पूरी खबर, **पेज नं. 35 पर...**



**ये हैं भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंग, यहां करें दर्शन!**

# विधानसभा चुनाव से पहले दलबदली, वापसी से लेकर गठबंधन बनाने का गरमाया माहौल!

अगले साल होने वाले पाँच राज्यों के विधानसभा चुनाव को लेकर सियासी बिछाई जाने लगी है। दलबदली, वापसी से लेकर गठबंधन बनाने का माहौल गमनि लगा है। यह बात भी बड़ी अहम है कि पंजाब में जहां कई बार राज्य की सत्ता संभाल चुके थिएमणी अकाली दल (बादल) ने बसपा के साथ समझौता कर लिया है। बड़ी बात यह है कि अकाली दल ने सरकार बनाने पर उप मुख्यमंत्री का पद बसपा के लिए छोड़ दिया है।

पंजाब एक ऐसा राज्य है जहां दलित वोट जनसंख्या के अनुपात में पूरे राज्य में सबसे अधिक हैं। खासकर राज्य के दोआबा क्षेत्र में बसपा भले ही दो दशकों से कोई बड़ा प्रदर्शन नहीं कर सकी, लेकिन पार्टी की राजनीतिक जमीन का बहुत महत्व है। अक्सर गठबंधन का उद्देश्य चुनाव जीतना रहता है व मुद्दों की बात बाद में होती है। भले ही अकाली दल प्रधान ने कहा है कि गठबंधन सिर्फ चुनावों के लिए नहीं, चुनावों के बाद भी यह जारी रहेगा, लेकिन दोनों पार्टियों ने इस मामले में अभी अपनी सैद्धांतिक नजदीकियां स्पष्ट करनी हैं।

पिछले महीने में हुए नगर कौसिल के चुनावों में अकाली दल (बादल) भाजपा के साथ अलग होने के बावजूद भी राज्य में दूसरी सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरा था। इसलिए पार्टी ने बसपा के वोट बैंक का सहारा लेने की रणनीति तैयार की है। अकाली दल ऐसा करके भाजपा की कमी को पूरा करने की कोशिश करेगा। दरअसल गठबंधन देश की राजनीति की वास्तविकता बन चुका है। राज्यों से लेकर केन्द्र तक गठबंधन सरकारें चल रही हैं। यह बात अब अकाली दल व बसपा दोनों को देखनी होगी कि वह पंजाब के मुद्दों के प्रति किस तरह की पहुंच अपनाते हैं।

उधर उत्तर प्रदेश में बीजेपी अपने संगठन को दुकस्त करने के लिए मंथन में जुटी है तो सपा छोटे-छोटे दलों के साथ गठबंधन बनाने में जुटी है। वहीं, कांग्रेस काश्मकश में फटी हुई है कि कैसे प्रियकांगांधी की छवि और लोकप्रियता को बचाए रखा जाए, क्योंकि 2022 के चुनाव पार्टी बेहतर नहीं कर पाई तो उसका लींधा असर प्रियकांगांधी पर पड़ेगा। ऐसे में कांग्रेस तय नहीं कर पा रही है कि वो अकेले या फिर गठबंधन के साथ चुनावी मैदान में उतरे।

दलबदली और वापसी की बात करें तो कांग्रेस के नेता जितिन प्रसाद ने भाजपा का दामन थाम लिया है। बंगाल में सरकार बनाने के बाद भाजपा में गए तृणमूल कांग्रेस के बड़े व पुराने नेता मुकुल राय ने अपने बेटे सहित पार्टी में वापसी कर ली है। यह घटना बहुत से सवाल खड़े करती है कि कोई नेता चुनावों से पहले कैसे अपनी पार्टी को छोड़ जाता है, व चुनाव होने के बाद बहुत बार लौट भी आता है। दूसरी पार्टियों के नेता पटा लेने वाली पार्टी की अपनी विचारधारा व रणनीति पर भी सवाल खड़े होते हैं कि किसी पार्टी विशेष में आने वाला नेता किस लालचवश आता है व प्रतिद्वंद्वी पार्टी महज वोटआंकड़े बढ़ाने के लिए बिना वैचारिक समानता के झट से शामिल कर लेती है।

दलबदलियों का दौर पार्टियों की विचारधारा के खोखलेपन के साथ-साथ नेता की निजी राजनीतिक कमजोर पकड़ को उजागर करता है। राजनीति सेवा है इसमें पद की अवसरवादिता भष्टाचार है।



-राजू श्रीवास्तव

# जासूसी के भंवर जाल में मोदी सरकार, लोगों की प्राइवेसी खतरे में!



दुनियाभर के 17 मीडिया संस्थानों की कंसोलियम ने दावा किया है कि दुनियाभर में सरकारें पत्रकारों और ऐकिटिविस्टों की जासूसी करा रही है। बीते माह पब्लिश हुई रिपोर्ट के मुताबिक भारत समेत कई देशों में सरकारों ने कठीब 180 पत्रकारों, मानवाधिकार कार्यकर्ताओं और ऐकिटिविस्ट्स की जासूसी की। इसके लिए इंजरायली कंपनी एनएसओ ग्रुप के हैकिंग साफ्टवेयर पेगासस का इस्तेमाल किया गया। इस रिपोर्ट में भारत में कम से कम 38 लोगों के जासूसी का दावा किया गया है।

द गार्जिंयन ने पेगासस स्पाइवेयर साफ्टवेयर के डेटा का अध्ययन कर दावा किया है कि इस सूची में समाचार वेबसाइट द वायर के एक सह-संस्थापक सिद्धार्थ वरदानजन और वरिष्ठ पत्रकार परंजॉय गुहा ठकुरता का नाम शामिल है। ठकुरता के फोन को 2018 में हैक कर लिया गया था। गार्जिंयन की रिपोर्ट में दावा किया गया है

कि उस समय ठकुरता इस बात की जांच कर रहे थे कि नरेंद्र मोदी सरकार कैसे फेसबुक का इस्तेमाल करके भारतीय लोगों के बीच ऑनलाइन 'गलत सूचना' फैला रही है।

रिपोर्ट के अनुसार, लीक हुए आंकड़ों के विवरण से पता चला है कि संयुक्त अरब अमीरात की पहली महिला पत्रकार टौला खलाफ, मोरक्को के स्वतंत्र पत्रकार और मानवाधिकार कार्यकर्ता उमर रेडी और अजरबैजानी खोजी पत्रकार खदीजा इस्मायिलोवा के नाम भी शामिल हैं। टौला खलाफ पिछले साल अखबार के इतिहास में पहली महिला संपादक बनी थीं। 2018 में जब उनका फोन हैक किया गया तब वह फाइनेंशियल टाइम्स में डिप्टी एडिटर थीं। उमर रेडी सरकार के कई भ्रष्टाचार का खलासा कर चुके हैं। दावा किया जा रहा है कि 2018 और 2019 के दौरान एनएसओ के इस साफ्टवेयर से उनका फोन हैक किया

गया था।

## क्या है पेगासस स्पाइवेयर साफ्टवेयर?

पेगासस एक स्पाइवेयर है। यह एक प्रकार का सॉफ्टवेयर है। जिससे किसी के भी फोन की जासूसी की जा सकती है। जासूसी ऐसी की उस फोन से किये जा रहे कॉल, मैसेज, या फिर अन्य किसी काम को आसानी से पूरी तरह देखा जा सकता है। आसान भाषा में समझिए कि यदि पेगासस सॉफ्टवेयर आपके फोन में डंस्टाल कर दिया जाए तो फिर आपके फोन की हर जानकारी जासूसी करने वाला व्यक्ति जान सकता है। यहाँ तक कि जासूसी करने वाला व्यक्ति आपके फोन का कैमरा और माइक्रोफोन तक चालू कर सकता है। जिसके बाद आप क्या कर रहे हैं और क्या बोल रहे हैं, हर बात का पता आसानी से चलता रहेगा। आपके फोन का लोकेशन चालू करके पता लगाया जा सकता है कि आप कहाँ जा रहे हैं? किससे मिल रहे हैं? इत्यादि।

## किसने बनाया और क्या है नियम?

पेगासस सॉफ्टवेयर को इजरायल की एक कंपनी ने बनाया है। इस इजरायली कंपनी का नाम एनएसओ है। एनएसओ दुनिया भर में इस सॉफ्टवेयर को बेचती है। हालांकि कंपनी यह दावा करती है कि वो इस सॉफ्टवेयर को सिर्फ किसी देश की सरकार या फिर अन्य सरकारी एजेंसियों को ही बेचती है। एनएसओ किसी भी प्राइवेट संस्था को अपना ग्राहक नहीं बनाती है। एनएसओ का यह धोषित मापदंड है कि वह पेगासस सॉफ्टवेयर आतंक और अपराध पर लगाम करने के लिए ही बेचती है। यह राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए ही किसी देश की सरकार या सरकारी संस्था को पेगासस का इस्तेमाल करने देती है। ध्यान रहे कि एनएसओ का यह पैमाना आधिकारिक है। समय-समय पर एनएसओ पर यह आरोप लगता रहा है कि कंपनी कई देशों की सरकारों को स्पाइविंग सॉफ्टवेयर करोड़ों लप्ये लेकर

बेच रही है। जिसका इस्तेमाल सरकारें अपने राजनीतिक विरोधियों की जासूसी करने में कर रही हैं। आरोप ये भी लगता है कि राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर विपक्षी नेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, पत्रकारों और बुद्धिजीवियों की जासूसी कराई जा रही है। इसका खुलासा सबसे पहले सत्तर के दशक में अमेरिका में हुआ था। अमेरिका के तत्कालिक राष्ट्रपति निकसन के ऊपर अपने विरोधियों की जासूसी करने का आरोप लगा जिसे वाटरगेट के नाम से जाना गया। तब काफी हो हल्ला मचा और निकसन को इस्तीफा देना पड़ा।

## क्या है पेगासस प्रोजेक्ट 2021 का मामला?

दुनिया भर के कई पत्रकारों ने मिलकर पेगासस को लेकर खोजी पत्रकारिता की है। इनमें दुनिया के 17 मीडिया संस्थानों के पत्रकारों ने मिलकर रिपोर्टिंग की है। इन पत्रकारों ने पेगासस सॉफ्टवेयर के जरिए

विपक्षी नेताओं, पत्रकारों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और अन्य लोगों की जासूसी कराए जाने का भंडाफोड़ किया है। पेगासस प्रोजेक्ट के तहत बहुत से फोन नंबरों की जांच एमनेस्टी इन्टरशनल नाम की एक संस्था द्वारा कराई गयी। एमनेस्टी इंटरनेशनल की साइबर सुरक्षा टीम ने यह खुलासा किया कि फोन नम्बरों पर पेगासस सॉफ्टवेयर का हमला हुआ है। एमनेस्टी ने जितने भी फोन नम्बरों की जांच की उनमें से आधे नम्बरों पर पेगासस के हमले का खुलासा हुआ है। यह साबित हो गया कि इन फोन नम्बरों पर पेगासस के जीरो किलेक सॉफ्टवेयर का आक्रमण हुआ है। एमनेस्टी के जांच की जानकारी को 17 मीडिया संस्थानों ने प्रकाशित किया। पेगासस प्रोजेक्ट की पहली रिपोर्ट 18 जुलाई, 2021 को प्रकाशित हुई। पेगासस प्रोजेक्ट में शामिल मीडिया संस्थानों ने इस रिपोर्ट को प्रकाशित किया है।



## भारत में निशाने पर कौन था?

दुनिया के कई देशों के नागरिकों पर पेगासस के माध्यम से जासूसी की गई है। इनमें अज़रबैजान, हंगरी, भारत, इटली, मेक्सिको, मोरक्को, सऊदी अरब, और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देशों के नाम शामिल हैं। भारत की द वायर नाम की मीडिया संस्थान भी पेगासस प्रोजेक्ट में शामिल थी। द वायर के पत्रकार भी उस खोजी रिपोर्टिंग का हिस्सा थे जिसके जरिए पेगासस जासूसी कांड का खुलासा हुआ है।

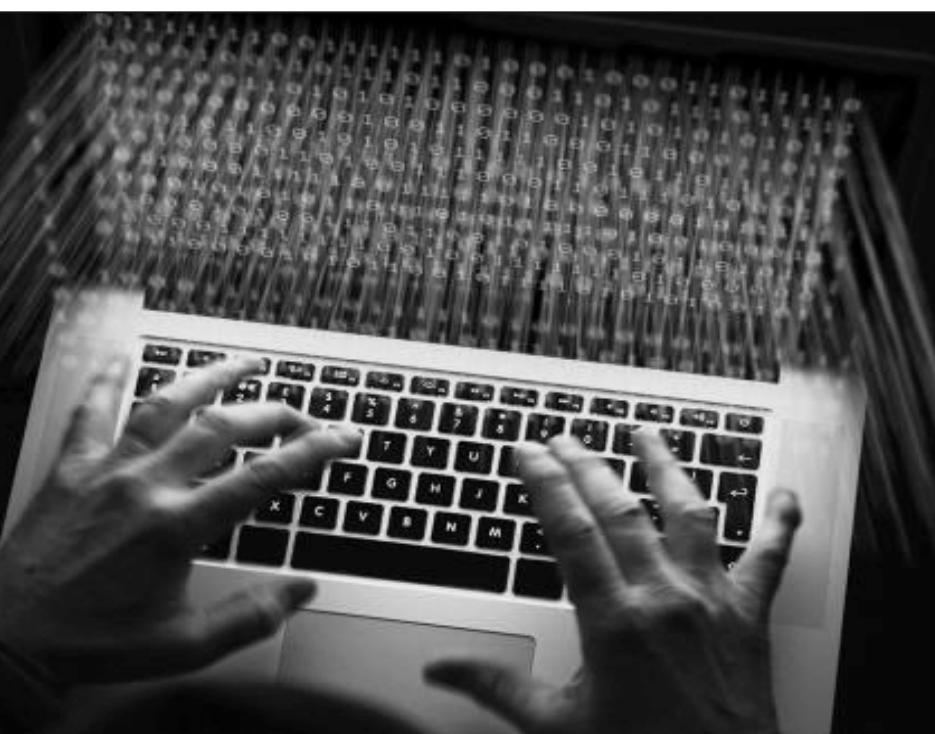
द वायर ने भारत में सबसे पहले पेगासस प्रोजेक्ट की रिपोर्ट छापी। यह रिपोर्ट प्रकाशित होते ही दिल्ली के पावर कॉटिडोर या कहें की सत्ता के गलियारे में हलचल तेज हो गई। रिपोर्ट में हुआ खुलासा बड़ा था। जिन लोगों के फोन की जासूसी कराई गई है उनमें कई बड़े नाम शामिल हैं। इसमें सबसे बड़ा नाम राहुल गांधी का है। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष व केंटल के वायनाड से सांसद राहुल गांधी के फोन की जासूसी की जा रही थी। रिपोर्ट आने के बाद राहुल गांधी ने कहा कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को अपने पद से इस्तीफा देना चाहिए। उन्होंने प्रधानमंत्री

नरेंद्र मोदी के न्यायिक जांच की मांग भी की है। राहुल गांधी ने कहा है कि "मेरे फोन की जासूसी हुई। ये मेरी निजता का मामला नहीं है। मैं विपक्ष का नेता हूं और जनता की आवाज उठाता हूं। ये जनता की आवाज पर हमला है।" राहुल गांधी के बाद दूसरा बड़ा नाम है अशोक लवासा का, अशोक लवासा पूर्व चुनाव आयुक्त हैं। अशोक लवासा वही चुनाव आयुक्त हैं जिन्होंने 2019 के आम चुनावों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर आचार संहिता के उल्लंघन पर सवाल उठाया था। इसके बाद अशोक लवासा की छुट्टी हो गई थी। साथ ही पेगासस प्रोजेक्ट की रिपोर्ट के मुताबिक इसके बाद से ही अशोक लवासा के फोन की भी जासूसी की जाने लगी। इस सूची में सीबीआई के पूर्व निदेशक अलोक वर्मा, कनटिक के पूर्व मुख्यमंत्री एच. डी. कुमारस्वामी, उप मुख्यमंत्री जी. परमेश्वर समेत कुछ अन्य कौण्ग्रेसी नेताओं के नाम भी शामिल हैं। इनके आलावा पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के भतीजे अभिषेक बनर्जी, चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर का भी नाम रडार में था। रिपोर्ट के अनुसार तकनीकी 40 पत्रकारों के फोन की भी जासूसी कराई जा रही थी।

जिसमें खुद द वायर के संपादक सिद्धार्थ वरदाजन का नाम शामिल है।

## जासूसी के शिकार पत्रकार ठपेश कुमार सिंह से बातचीत

फोन की जासूसी में एक नाम झारखण्ड के पत्रकार ठपेश कुमार सिंह का भी है। ठपेश कुमार सिंह झारखण्ड के रामपुर के रहने वाले हैं। ठपेश झारखण्ड के आदिवासी इलाकों में रिपोर्टिंग करते हैं। ठपेश ने मोतीलाल बाटके की हत्या को लेकर एक रिपोर्ट लिखी थी। झारखण्ड में ही 9 जून, 2017 को मोतीलाल बाटके की एक फर्जी एनकाउंटर में सुरक्षाबलों ने हत्या कर दी थी। सुरक्षाबलों ने कहा था कि मोतीलाल बाटके एक माओवादी था। लेकिन ठपेश की रिपोर्ट से खुलासा हुआ कि मोतीलाल बाटके एक आम आदिवासी थे। उन्हें इंदिरा आवास योजना के तहत आवास भी मिला हुआ था। पेगासस प्रोजेक्ट की रिपोर्ट के मुताबिक ठपेश कुमार सिंह के फोन की जासूसी इसी खबर के दो महीने बाद थाढ़ हो गई थी। ठपेश कुमार सिंह के अनुसार उनके जीवनसाथी और एक दोस्त के फोन की भी जासूसी की गई है।



ठपेश ने न्यूज़ बकेट से बातचीत में कहा कि "मैं झारखण्ड के आदिवासी इलाकों में रिपोर्टिंग करता हूं। सरकार जंगलों को बेच देना चाहती है। खनन के लिए जंगल को अडानी, अम्बानी और मेदांता जैसे उद्योगपतियों के हाथों बेचा जा रहा है। इन सब में अत्याचार होता है आदिवासियों पर। सरकार की पूरी कवायद है कि आदिवासियों को खत्म कर दिया जाए। इन सब पर ही मैं रिपोर्टिंग करता हूं। इसीलिए सरकार डरी हुई है। क्योंकि झारखण्ड के क्षेत्रीय पत्रकार भी इन मुद्दों को नहीं उठाते हैं। मैं इन खबरों को वेबसाइट पर लिखता हूं। अब जो खबर स्थानीय अखबारों में नहीं छपती है, वो वेबसाइट के माध्यम से पूरी दुनिया में पहुंच जाता है। इस तरह सरकार की हकीकत सामने आ जाती है।" ठपेश ने बातचीत में आगे कहा कि "हम बिलकुल डरे हुए नहीं हैं। डरना तो सरकार को है।" उन्होंने यह भी कहा कि "हम जैसे आदिवासी इलाकों के पत्रकार हमेशा सरकार के निशाने पर रहते हैं। हम जैसे पत्रकारों को जेल भी भेज दिया जाता है। स्थानीय पुलिस हम पर नजर रखती है। लेकिन इस बार दिल्ली के पत्रकारों की भी बड़े स्तर पर जासूसी हुई है इसलिए ये मामला इतना ज़ोर पकड़े हुए है।"

### निजता के उल्लंघन से अधिक है यह मामला

पेगासस के जरिए हुई जासूसी का मामला सिर्फ निजता के उल्लंघन का मामला नहीं है। ये निजता में हक्केष से बहुत आगे की बात हो चुकी है। इस बात को एकदम सामान्य भाषा में समझिए कि पेगासस सॉफ्टवेयर की सहायता से आपका फोन पूरी तरह से जासूसी करने वाले व्यक्ति के काबू में आ जाता है। वो चाहे तो आपके फोन की हर एक जानकारी चोटी कर सकता है। यहीं नहीं जासूसी करने वाला व्यक्ति जब चाहे तब आपके फोन का कैमरा ऑन करके आपकी वीडियो बना सकता है। आपकी कोई भी बातचीत रिकॉर्ड कर

सकता है। बाद में इस वीडियो और रिकॉर्डिंग का इस्तेमाल व्यक्ति को ब्लैकमेल करने के लिए भी किया जा सकता है। थोड़ा बड़े स्तर पर सोचे तो यह देश के लोकतंत्र पर हुआ सबसे बड़ा हमला है। भारत के जिन लोगों पर पेगासस सॉफ्टवेयर का आक्रमण हुआ है, उसमें ज्यादातर लोग मोदी सरकार की नीतियों के आलोचक हैं। हालांकि इस सूची में कुछ नाम भाजपा के नेताओं की भी है।

### सवाल जिनके घेरे में फंसी है मोदी सरकार

भारत के केंद्र सरकार ने पेगासस मामले पर कहा है कि देश में किसी भी व्यक्ति का अनलॉफुल इंटर्सेप्शन नहीं किया गया है। लेकिन अब आप क्रोनोलॉजी समझिए। पेगासस सॉफ्टवेयर बनाने वाली इंजिनियरिंग कंपनी साफ़-साफ़ कहती है कि "कंपनी अपना सॉफ्टवेयर किसी भी प्राइवेट संस्थान या व्यक्ति को नहीं बेचती है। पेगासस सॉफ्टवेयर सिर्फ़ किसी देश की सरकार या सरकारी एजेंसी को ही बेची जाती है।" अब सवाल ये है कि क्या केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार ने पेगासस सॉफ्टवेयर खरीदा? या फिर भारत की किसी सरकारी जांच एजेंसी ने पेगासस खरीदा? अगर इन दोनों में से किसी ने नहीं खरीदा तो क्या किसी विदेशी सरकार ने इस सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल भारत के नेताओं, पूर्व नौकरशाहों, पत्रकारों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के

खिलाफ़ किया है? ये तीन स्थितियां ही इस मामले में संभव हैं। तीनों ही दशाओं में जवाबदेही केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार की ही होगी। किसी भी स्थिति में केंद्र सरकार को इस जासूसी कांड की जांच करानी ही होगी।

दिलचस्प यह कि सरकार पर पैनी नजर रखने वाले भाजपा के विषय नेता व राज्यसभा सांसद सुब्रह्मण्यम द्वारा ने एक रिसर्च की ओर उन्होंने सरकार पर सीधे सवाल दागा कि "इंडियन नेशनल सिक्योरिटी काउंसिल के बजट पर जब मैंने ध्यान दिया तो पाया कि 2014-15 में 44 करोड़, 2016-17 में 33 करोड़ और 2017-18 में 333 करोड़ रुपये खर्च पहुंच गया। ये 300 करोड़ किस लिए बढ़ाये गये और कहाँ खर्च हुआ ये मोदी सरकार के प्रवक्ता को बताना चाहिए।" गौरतलब है कि फ्रांस और इंग्रजील जैसे देशों ने अपने देश के नागरिकों की जासूसी होने पर जांच कराने की बात कही है। लेकिन भारत सरकार अब तक जांच कराने को लेकर कुछ नहीं बोल रही है। अब सवाल यह है कि अगर नरेंद्र मोदी सरकार ने जासूसी नहीं कराई है तो उसे जांच कराने में क्या समस्या है? यह मसला राष्ट्रीय सुरक्षा की है। लेकिन सरकार पेगासस कांड की जांच कराने के मूड में नहीं दिख रही है।



# फोटो पत्रकार दानिश सिंहीकी का जाना, प्रधानमंत्री मोदी का बयान न आना!



कहते हैं कि एक फोटो एक हजार शब्दों के बराबर होती है। लेकिन कुछ तस्वीरों की व्याख्या एक हजार शब्दों में नहीं बल्कि दस हजार शब्दों में भी नहीं किया जा सकता है। कुछ तस्वीरों ऐसी भी होती हैं जिन्हें आप शब्दों के जरिए अभिव्यक्त ही नहीं कर सकते हैं। ये तस्वीरें अपने आप में एक दौर का दस्तावेज होती हैं। ऐसे ही तस्वीरों का अंबार था दानिश सिंहीकी के पास। वही दानिश सिंहीकी जिनकी हत्या कवरेज के दौरान कर दी गई। अफगानिस्तान में अफगानी सेना और तालिबानियों के बीच चल रहे संघर्ष के बीच 16 जुलाई को दानिश सिंहीकी की हत्या हो गई। तालिबानी आतंक की एक गोली उन्हें इस दुनिया से दूर कर गई।

दानिश सिंहीकी भारत के मशहूर फोटो पत्रकार थे। मूलतः दिल्ली के रहने वाले थे।



वो अंतर्राष्ट्रीय न्यूज एंजेनी रॉयटर्स के लिए काम करते थे। दानिश सिंहीकी इन दिनों अफगानिस्तान में तालिबानी आतंक की कहानियों को अपने कैमरे में कैद कर रहे थे। अपने कैमरे के जरिए उन तमाम दृश्यों को दर्ज कर रहे थे जो आने वाले समय में दस्तावेज बनने वाली थीं। दानिश सिंहीकी अफगान सेना के साथ ही इस संघर्ष की कवरेज कर रहे थे। इसी दौरान एक हमले में उनकी जान चली गई। बीते 13

जुलाई को ही दानिश सिंहीकी और मौत का आमना-सामना हुआ था। उन्होंने एक द्वीप के जरिए बताया था कि अफगान सेना की जिस गढ़ी में वो सवार थे उस पर हमला हो गया था। लेकिन उस हमले में उनकी जान बच गई थी। दानिश सिंहीकी ने खुद के बच जाने पर अपने को खुशकिस्मत बताया था। लेकिन 16 जुलाई को किस्मत ने दानिश सिंहीकी का साथ नहीं दिया। हाल के दिनों में उनकी खींची गई कई तस्वीरें बेहद सुखियों में रही थीं। दिल्ली दंगे के दौरान सीए-एनआरसी समर्थक भीड़ जब एक मुसलमान को मार रही थी तब उस मोर्चे पर दानिश सिंहीकी मौजूद थे। उस घटना की एक तस्वीर दानिश सिंहीकी ने अपने कैमरे से कैद की थी। इस फोटो को लेकर बहुत बहस हुई थी। बात दानिश सिंहीकी के साहस की भी हुई थी। क्योंकि जो भीड़ उस मुसलमान नौजवान को हैवानों की तरह पीट रही थी, वही भीड़ दानिश सिंहीकी पर भी हमला कर सकती थी।





रोहिंग्या शरणार्थियों के साथ हुए अत्याचारों को दानिश सिद्धीकी ने केमरे में केद किया था। उनके साथ हुए शोषण और अमानवीय व्यवहार का दस्तावेजीकरण उन्होंने किया था। इसी दौरान की एक तस्वीर के लिए 2018 में उन्हें पत्रकारिता जगत का बेहद ऊंचा सम्मान पुलिलर पुरस्कार मिला था। इतना प्रतिष्ठित पुरस्कार मिलने पर भी दानिश सिद्धीकी का व्यवहार अविश्वसनीय था। उन्हें जानने वाले लोग उनके स्वभाव को याद कर रहे हैं। जब उन्हें पुलिलर पुरस्कार मिला था तब उन्होंने कहा था कि "मैंने जो किया है वो कोई वीरता का काम नहीं है। मैंने सिर्फ वही किया है जो हमारा काम है।" इस दौर में जब भारत में पत्रकारिता सूली पर छतपटा रही है और ज्यादातर पत्रकार सत्ता के सामने लटपटा रहे हैं तब दानिश सिद्धीकी की यह बात एक ऐखा खींचने वाली है। जिसे पार करने की आजूहर सच्चे पत्रकार की होगी।

कोरोना के दौर में जब भारत की नरेंद्र मोदी सरकार लगातार हो रही मौतों पर झूठ बोल रही थी और आंकड़े छुपा रही थी तब दानिश सिद्धीकी की एक तस्वीर ने इस झूठ को बेपर्दा कर दिया था। दिल्ली के एक शमशान घाट की तस्वीर जो काफी ऊपर से ली गई। उस तस्वीर में एक साथ दर्जनों लाथों जल रही थीं। ये शव कोरोना संक्रमण से मरने वाले लोगों के थे। भले ही ये तस्वीर दिल्ली के एक शमशान घाट की थी। लेकिन यह पूरे देश का एक नमूना था।

आज भले ही दानिश सिद्धीकी इस दुनिया में नहीं रहें, मगर वह अपनी तस्वीरों में हमेशा जिंदा रहेंगे। ऐसी तस्वीरें जो एक हजार शब्द के बराबर नहीं हैं। एक लाख शब्दों के बराबर भी नहीं हैं। वास्तव में इन तस्वीरों को शब्दों में ढाला ही नहीं जा सकता। दानिश सिद्धीकी के निधन के बाद सोशल मीडिया पर कई लोग उनकी ऐसी ही बेमिसाल और चीखती तस्वीरें साझा कर रहे हैं।

#### **प्रधानमंत्री ने नहीं जताया थोक -**

दानिश सिद्धीकी की मृत्यु से देश की पत्रकार बिरादरी थोक में झूबी हुई है। देश ही नहीं दुनिया भर से लोग उनकी हत्या की निन्दा कर रहे हैं, उनके जज्बे और काम को सलाम कर रहे हैं। अफगानिस्तान के राष्ट्रपति ने भी दानिश सिद्धीकी की हत्या पर दुख जताया है। भारत के विदेश सचिव हर्ष वी. श्रृंगला ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में दानिश सिद्धीकी की हत्या की निन्दा की और दुख भी जताया। भारत के सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने भी दानिश सिद्धीकी की मृत्यु पर दुख प्रकट किया। अफगानिस्तान के राष्ट्रपति अशरफ गन्नी ने भी उनकी मृत्यु पर थोक प्रकट किया। लेकिन दानिश सिद्धीकी की हत्या पर भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक भी द्वीप नहीं किया।

प्रधानमंत्री ने किसी अन्य माध्यम से भी कोई बयान नहीं दिया है। सोशल मीडिया पर इस बात को लेकर चर्चा बेहद तेज है। लोग याद कर रहे हैं कुछ समय पहले की बात जब भारतीय पुलूष क्रिकेट टीम के खिलाड़ी शिखर धवन के अंगूठे में चोट लगी थी तब प्रधानमंत्री ने द्वीप कर दिया था। पीएम मोदी ने तब शिखर धवन को ठीक होने की शुभकामनाएं दी थी। वैसे भी प्रधानमंत्री इस मामले में बेहद सक्रिय हैं। वे अक्सर लोगों को जन्मदिन की बधाई, किसी के निधन पर थोक जताते रहते हैं। सोशल मीडिया पर उनकी सक्रियता खूब रहती है। कुछ महीने पहले जब "आज तक" चैनल के पत्रकार टोहित सरदाना की कोरोना से मृत्यु हुई थी तब पीएम मोदी ने द्वीप किया था। लेकिन दानिश सिद्धीकी जिन्होंने पूरी दुनिया में अपने फोटो पत्रकारिता की चमक से देश का नाम टैशन किया, उनकी हत्या पर प्रधानमंत्री मोदी की चुप्पी कई सवाल खड़े करती है।

सवाल है कि क्या प्रधानमंत्री की चुप्पी इस वजह से है कि दानिश सिद्धीकी ने हमेशा सच को सामने लाया। उनकी तस्वीरें बेहद साफगोई के साथ सरकार से सवाल पूछती थीं और सरकार के झूठ की पोल खोलती थीं।



# सामने आते जा रहे हैं बॉलीवुड के पीछे के असली रंग!

आजकल सोशल मीडिया पर अल्लीलता जमकर पटोसी जा रही है। इन अल्लील कंटेंट्स को पटोसने में बॉलीवुड और कई बहुचर्चित ओटीटी प्लेटफॉर्म अहम भूमिका निभा रहे हैं।

आपको बता दें कि इन कंटेंट्स का सीधा प्रभाव हमारी युवा पीढ़ी पर पड़ रहा है। खासकर कोटोना काल में जब अधिकतर बच्चे घरों से ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, उन पर ऐसे कंटेंट्स का काफी असर होता है। इसकी टीकथाम के लिए बॉलीवुड में सेंसर बोर्ड बनाया गया है मगर इसका भी कोई खास फायदा देखने को नहीं मिल रहा है।

बात करें बॉलीवुड की तो कई बड़ी नामचीन हस्तियां अल्लील कंटेंट्स पटोसने में अहम भूमिका में हैं, जिनके नामों का खुलासा समय-समय पर होता भी रहता है। अब मुद्दा ये उठता है कि जब अल्लील कंटेंट्स को पटोसने से बचाव के लिए सेंसर बोर्ड बनाया गया है तो फिर ऐसे कंटेंट्स सोशल मीडिया पर कैसे प्रसारित होते हैं? आज देश की एक बड़ी हस्ती का नाम फिर से अल्लीलता पटोसने में उजागर हुआ है, वो नाम है राज कुंद्रा का।

वैसे तो राज कुंद्रा का बॉलीवुड में एक अलग रसूख था। मगर अभिनेत्री शिल्पा शेटी से शादी करने के बाद सभी की जुबान पर उनका नाम आने लगा। एक बार फिर से उनका नाम तब चर्चा में आया जब पोर्नोग्राफी केस में उनके खिलाफ कई अहम सबूत मिले।

बात करें अगर तथ्यों की तो राज कुंद्रा के खिलाफ कई ऐसे सबूत मिले हैं जो ये साबित



करते हैं कि उनकी कंपनी पोर्नोग्राफी में सम्मिलित है। राज कुंद्रा के खिलाफ कई अभिनेत्रियों ने भी गवाही दी है, जिससे ये साबित होता है कि उनकी कंपनी वियान इंडस्ट्री पोर्नोग्राफी में लिप्त थी।

इस मामले के उजागर होते ही कई और बड़े चेहरे भी बेनकाब हुए हैं और कड़यों की तलाश मुंबई पुलिस की क्राइम ब्रांच कर रही है।

कुल मिलाकर हम आपको ये बताना चाहते हैं कि बॉलीवुड की दुनिया स्क्रीन पर जितनी रंगीन दिखती है उतना ही उसके पीछे का रंग काला है।

आए दिन इस इंडस्ट्री के भद्दे पहलू बेनकाब होते जा रहे हैं। ये हमारे देश के उभरते कलाकारों के लिए एक संदेश भी है कि इस इंडस्ट्रीज को चुनने से पहले इसके सारे पहलुओं को देखें।

राज कुंद्रा के पोर्नोग्राफी केस से पहले भी अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत के सुसाइड

केस के साथ बॉलीवुड में इंग्स का खुलासा हुआ। इस मामले में एक द्रेस रिया चक्रवर्ती, कॉमेडी कलाकार भारती जैसे कुछ बड़े नाम उजागर हुए मगर समय के साथ सभी मामले ठंडे बस्ते में चले गए।

इसके अलावा अन्य सोशल मीडिया पर भी अल्लीलता का प्रदर्शन जमकर किया जाता है। आजकल प्रचलन में चलने वाले स्मार्ट फोन में किसी प्रकार की साइट पर क्लिक करते ही ऐसे विजापन सामने आने लगते हैं। भारत के दर्थकों के बारे में एक कड़वा सच यह भी है कि एक सर्वे में पाया गया कि भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा पोर्नोग्राफी का बाजार बन चुका है, यानी यहां पोर्न वीडियो देखने वालों की संख्या दुनिया में तीसरे पायदान पर है। अब देखना दिलचस्प होगा कि क्या इनपर कोई रोक लगती है? या इंटरनेट पर इस प्रकार की अल्लीलता पटोसी जाती रहेगी।



विकास श्रीवास्तव

# नेक है सहकारिता मंत्रालय के गठन की पहल, चुनौतियां कर रही हैं इंतजार!

जुलाई महीने की शुरुआत में ही केंद्र सरकार का मंत्रिमंडल विस्तार हुआ। इस मंत्रिमंडल विस्तार के दौरान ही केंद्र सरकार ने एक नए मंत्रालय की नींव रखी। ये नया मंत्रालय है 'सहकारिता मंत्रालय'। सहकारिता मंत्रालय का अतिरिक्त कार्यभार केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को सौंपी गई है। इस तरह पहले सहकारिता

मंत्री बन गए हैं अमित शाह। सहकारिता मंत्रालय का स्वतंत्र गठन, भारत सरकार द्वारा उठाया गया एक लाभदायक कदम है। जो सहकारिता आंदोलन में बिना किसी विवाद के एक नए युग का सूत्रपात करेगा। अब इसके जरिये लाखों लोग अपनी उन्नति का मार्ग को स्वयं ही प्रशस्त कर सकेंगे।

ध्यान में रखते हुए और अपनी बौद्धिक योग्यता का परिचय देते हुए केंद्र में एक नए और बेहृद ज़रूरी सहकारिता मंत्रालय के गठन का निर्णय लिया। प्रधानमंत्री मोदी के चिरपरिचित अंदाज में यह एक युगांतकारी कदम है। इस नए आंदोलन का उद्देश्य एक साथ लाखों लोगों को लेकर उनकी समग्र प्रगति, विकास व समृद्धि मार्ग को है।

इस महत्वपूर्ण फैसले का एक सिरा देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से भी जुड़ी है। जो बेहृद अहम है। जिनका आभार देश की समर्पण जनता और विभिन्न वर्गों के लोग खुले मन से कर रहे हैं। उन्होंने समय की मांग को

सवाल ये भी है कि सहकारिता मंत्रालय में कितनी सक्रियता देखने को मिलेगी? क्या जिस उद्देश्य से इस मंत्रालय का गठन हुआ है वो पूरा हो पाएगा? क्या सहकारिता मंत्रालय जमीन पर भी दिखेगा? क्या देश में कमजोर पड़ चुकी सहकारिता आंदोलन को वो ऑक्सीजन मिल पाएगी जिसकी इसे सख्त ज़हरत है?

## समझिए सहकारिता मंत्रालय की भूमिका

इस नए नवेले सहकारिता मंत्रालय का मूल वाक्य है "सहकार से समृद्धि"। सहकारिता मंत्रालय इसी सहकार से समृद्धि लेने के लक्ष्य से काम करेगा।





देश में सहकारिता आंदोलन को मजबूती प्रदान करने के लिए एक अलग प्रशासनिक, कानूनी और नीतिगत ढंचा प्रदान करेगा। केंद्र सरकार ने कहा है कि यह मंत्रालय सहकारिता को गहराई प्रदान करने का काम करेगा और सच्चे मायनों में इस आंदोलन को एक जनांदोलन बनाने के लिए कोशिश करेगा। सहकारिता मंत्रालय सहकारी समितियों के लिए कारोबार सरल बनाएगा। इसके साथ ही बहुराज्यीय सहकारी समितियों को आगे बढ़ाने में मदद करेगा। बता दें कि सहकारिता के तहत जनता के बीच से ही लोग आपस में मिलकर एक समिति बनाते हैं। ये समिति किसी खास उद्देश्य से काम करती है। इनके लक्ष्य साझा होते हैं। इसके तहत लोग बैंकिंग, खेती, चीनी

मिल संचालन, डेयरी फार्मिंग जैसे काम करते हैं। सहकारिता के तहत कार्य करने वाले भारत में लगभग 1,94,195 सहकारी डेयरी सोसाइटी और लगभग तीन सौ से ज्यादा चीनी मिल एसोसिएशन हैं। देश के कई शहरों में आपको सहकारी बैंक भी देखने को मिल जाएंगे। सहकारिता आंदोलन के इतिहास की जड़ें गुजरात में जमी हुई हैं। गुजरात में ही अमूल ब्रांड की शुद्धारात एक सहकारी समिति के रूप में हुई थी। अमूल ब्रांड आज देश के सबसे बड़े नामों में शुमार है। हालाँकि बीतते वर्क के साथ ही सहकारिता आंदोलन का वृक्ष पतझड़ का शिकार हो गया। इसके पते झाड़ गए। अब मुश्किल से इसकी शाखाएं ही बची हैं। जिसमें खाद पानी देकर फिर से हरा-भरा

करने की जिम्मेदारी सहकारिता मंत्रालय पर है। केंद्र सरकार की ये पहल तो सही है लेकिन जब तक यह जमीनी स्तर पर काम नहीं करेगा और सहकारी समितियों को इससे लाभ नहीं मिलने लगेगा तब तक इसके गठन का कोई अभिप्राय नहीं होगा। सहकारी समितियां अपनी आँखें खोलकर उस रस्ते को निहार रही हैं जिससे इन्हें ताकत मिलने की आशा है। सबाल बड़ा है कि क्या भारत के पहले सहकारिता मंत्री इन आकांक्षाओं को पूरा कर पाएंगे?

(ये लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं।)



सुधील चन्द्र पांडेय

# पीएम मोदी के पसंदीदा काम ने मंत्रीमंडल से रविशंकर प्रसाद की छुट्टी कर दी!

बीते महीने की सबसे बड़ी सियासी सुखियों में से एक रहा केंद्रीय मंत्रीमंडल विस्तार। नरेंद्र मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल के तीसरे साल मंत्रीमंडल का विस्तार किया गया है। विस्तार वाकई काफी विस्तृत रहा। दर्जन के भाव में नए नेताओं को मंत्री बनाया गया है। भले ही ज्यादातर नेताओं के जिम्मे राज्यमंत्री का ही प्रभार क्यों न आया हो! इस विस्तार से पहले मंत्रीमंडल में सदस्यों की संख्या 52 थी। जो अब प्रधानमंत्री समेत 78 हो चुकी है।

इस मंत्रीमंडल विस्तार में 2022 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव का भी खूब ध्यान रखा गया। जिसके चलते सूबे के कुल 8 नेताओं को केंद्रीय मंत्री बनाया गया है। लेकिन इन नए नववेले चेहरों के मंत्री बनने के लिए कई पुराने दिग्गजों को अपनी कुर्सी त्यागनी पड़ी। मंत्रीमंडल विस्तार से पहले कुल 12 मंत्रियों से इस्तीफा लिया गया। सूत्रों के मुताबिक भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष जे. पी. नड्डा ने इन मंत्रियों को 8 जुलाई की सुबह 6 बजे ही फोन किया था। फोन बधाई देने के लिए नहीं बल्कि इस्तीफे के लिए। इस इस्तीफे की लंबी सूची में तीन नाम ऐसे थे जिसने सभी को चौका दिया। कानून मंत्री रविशंकर प्रसाद, रघवार्य मंत्री डॉ. हर्षविधन और सूचना प्रसारण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर।

सभी मंत्रियों के इस्तीफे की वजह अलग थी। हालांकि भाजपा के इन तीन बड़े नेताओं के इस्तीफे में से विशेष चर्चा रविशंकर प्रसाद के इस्तीफे पर हुई। हर पत्रकार अपने सूत्रों

का घोड़ा दौड़ा रहा था कि आखिर रविशंकर प्रसाद किस गेंद पर आउट हुए हैं। इन सभी हलचलों के बीच एक इशारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने छुट्टी कर दिया।

मंत्रियों के साथ बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि सभी मंत्री अपने काम को चमकाने की कोशिश करें ना कि चेहरा चमकाने की। पीएम ने अपने नए मंत्रीमंडल को यह भी नसीहत दे दी कि जितना हो सके मीडिया से दूर रहें। बेवजह मीडिया की सुखियों में न आएं। अब प्रधानमंत्री मोदी का यह इशारा किसकी ओर था? हवाई तीर

नियमों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार का हनन बता दिया। इस प्रपंच ने मीडिया में खूब सुखियां बढ़ोटी।

भारत सरकार की ओर से यह मामला देख रहे थे रविशंकर प्रसाद। क्योंकि कानून मंत्री के साथ साथ वो आईटी मंत्री भी थे। द्विटर के साथ छिड़े इस विवाद पर रविशंकर प्रसाद ने प्रेस कांफ्रेंस भी किए। हचक कर द्वीप भी किया। विडंबना ऐसी की द्विटर के विरोध में रविशंकर प्रसाद द्विटर पर ही द्वीप कर रहे थे। इस दौरान रविशंकर प्रसाद टेलीविजन चैनलों और अखबारों में छाए रहे। लगभग

हर दूसरे या तीसरे दिन रविशंकर प्रसाद का बयान इस मसले पर देखने को मिल ही रहा था।

द्विटर के साथ हुए विवाद पर रविशंकर प्रसाद का सुखियों में रहना, मंत्रीमंडल से उनका इस्तीफा और फिर पीएम मोदी की अपने मंत्रियों को मीडिया से दूर रहने की नसीहत, ये तीनों बातें एक

टेक्स्ट में दिखाई देती हैं। ऐसा लगता है सुखियों और मीडिया का चहेता होना रविशंकर प्रसाद के लिए मुश्किलें खड़ा कर गया। रविशंकर प्रसाद मंत्री रहते हुए कुल तीन मंत्रालयों की जिम्मेदारी संभाल रहे थे। कानून एवं न्याय मंत्रालय, संचार मंत्रालय और डिलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय। हालांकि अब रविशंकर प्रसाद के पास कोई मंत्रालय नहीं है। वजह है प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का सबसे पसंदीदा काम। क्या है प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का सबसे पसंदीदा काम? अनुमान आप खुद ही लगाइए, इस लेख को पढ़कर।



सभी मंत्रियों के इस्तीफे की वजह अलग थी। हालांकि भाजपा के इन तीन बड़े नेताओं के इस्तीफे में से विशेष चर्चा रविशंकर प्रसाद के इस्तीफे पर हुई। हर पत्रकार अपने सूत्रों

# तहसीलों और सरकारी कायलियों की स्वर्गीय खासियत!



उत्तर प्रदेश के सरकारी कायलियों की कार्यप्रणाली और महान सिस्टम ने आम जनता का बुरा हाल कर रखा है। सरकारी कायलियों और विभागों की कथनी और करनी के बीच जो अंतर है उसमें भोले-भाले आम लोग फंसे हुए हैं। इन सरकारी कायलियों और विभागों से जिन लोगों का पाला पड़ता है वही लोग इनकी विशेषताओं का वर्णन कर सकते हैं।

ज्यादातर कायलिय उत्तर प्रदेश सरकार के राजस्व से जुड़े हैं। इनमें कुछ विभाग तो अपनी लेटलतीफी की विशेषताओं के लिए बेहृद कुख्यात हैं। जैसे तहसीलों के जिम्मेदार विभागीय कायलिय, चकबंदी विभाग, तहसील रिकॉर्डर मम इत्यादि। सरबसे पहले तो ये सभी कायलिय खुलते ही। बने तक हैं। जिनका वास्तव में समय होता है 10 बने तक का। कायलिय खुलने के बाद इन कायलियों में लगे कुसियों के मालिक आते हैं। फिर अपनी जगह पर येन केन प्रकारेण बैठते हैं। इसके बाद थुँड होती सरकारी कायलियों की मथहूर आपसी गुफ्तगू व्यंग्य, घर के किसी आदि। इन सब के साथ ही लगी रहती है चाय की चुस्की। जो व्यक्ति कोसों दूर से गाँवों-देहातों और शहरी क्षेत्रों से इन कायलियों पर अपने काम से पहुँचता है वो तब तक कतारों में धक्के खा रहा होता है। सौकड़ों की संख्या में आये ये लोग अपने कागजातों पर हुई कार्टवाई के बारे में जानने के लिए या फिर एक हस्ताक्षर के लिए घिघियाते नजर आते हैं। उसे सही जानकारी न देकर या न कर विभाग का चक्रकर कठवाया जाता है। आम लोगों का इधर-उधर दौड़ाना जैसे आम बात ही हो गई है। इतनी औपचारिकताओं के बाद इन विभागों के कर्मचारी कुछ कागज/फाइल लेकर अपनी सीट छोड़कर दूसरे विभागों के भ्रमण पर चले जाते हैं। लेकिन अक्सर देखा जाता

है कि दूसरे विभाग में किसी काम से जाने के नाम पर ये कर्मचारी और अधिकारी रफूचककर हो जाते हैं। न्याय पाने की आस में कागजात के विवरण हेतु लोग खड़े ही रहते हैं। ये लोग अधिकारी महोदय का इंतजार करने को बेबस होते हैं।

तहसील, चकबंदी, आरटीओ, नगर पालिका, बोर्ड ऑफिस जैसे सरकारी विभाग ज्यादातर इसी ढरें पर चल रही हैं। विभागीय अष्टाचार इन्हें दीमक की तरह चांट रही है।

इस पुरे अष्ट व्यवस्था में बदलाव ज़हरी है ताकि आम लोगों की परेशानी कम हो सके। इसके लिए ज़हरी है कि आला अधिकारी एयर कंडीशन ऑफिस का मोहू त्यागकर नियमित अंतराल पर इन विभागों का औचक निरिक्षण करें साथ ही कोई ग़इब़ी पाए जाने पर तत्काल कार्रवाई भी करें। हालांकि इन सरकारी कायलियों के कार्यों में होने वाले लेटलतीफी का कारण ये भी है कि सरकारी कर्मचारियों को कई तरह के काम सौंप दिए जाते हैं। कोई वर्गीकरण और विशेषज्ञता नहीं है। एक कर्मचारी पर कई तरह के काम लाद दिए जाए हैं। इसलिए कर्मचारी भी मनमुटाई करना सीख गया है। लेकिन इन सब में पिसते हैं आम लोग। कागजों का काम कराने के लिए लोग धूप हो या बारिथ हर मौसम में कोसों की दूरी तय करके तहसीलों पर आते हैं और न जाने कितनी बार खाली हाथ मुंह लटकाए लौट जाते हैं। ये एक ऐसी समस्या है जिस पर बहुत अधिक लोगों का ध्यान नहीं जा रहा है। लेकिन इस समस्या की चंगुल में बहुत से लोग फंसे हुए हैं और इस पीड़ा को महसूस कर रहे हैं।

**(ये लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं।)**



## जनसंख्या नियंत्रण बिल: वक्त की जठरत या फिर सियासत का नमूना?



जय पाल

उत्तर प्रदेश में इन दिनों एक विधेयक को लेकर बहस छिड़ी हुई है। उत्तर प्रदेश में जनसंख्या नियंत्रण बिल बेहद सुर्खियों में है। नेता से जनता तक हर कोई इस चर्चा में शामिल है। उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार ने इस विधेयक को पारित करने की पूरी तैयारी कर ली है। उत्तर प्रदेश विधानसभा के चुनाव से ठीक पहले यह विधेयक राजनीतिक रूप से भी बेहद अहम माना जा रहा है।

उत्तर प्रदेश जनसंख्या नियंत्रण बिल 2021 का मसौदा तैयार हो चुका है। इस बिल का मसौदा बनाया है उत्तर प्रदेश राज्य विधि आयोग ने। आयोग ने इस बिल को लेकर सुझाव भी मांगे हैं। उत्तर प्रदेश राज्य विधि आयोग की वेबसाइट ([upslc.upscdc.gov.in](http://upslc.upscdc.gov.in)) पर जाकर कोई



भी व्यक्ति अपनी राय दे सकता है। आप चाहें तो आयोग को बता सकते हैं कि इस कानून में कौन सी बातें शामिल की जा सकती हैं या क्या बदलाव किए जा सकते हैं? ताकि उससे सरकार के जनसंख्या नियंत्रण का लक्ष्य पूरा हो सके। गौरतलब है कि 11 जुलाई को विश्व जनसंख्या दिवस पर योगी आदित्यनाथ सरकार ने नई जनसंख्या नीति का ऐलान कर दिया। सरकार इस नीति को जल्द ही लागू करने वाली है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने सरकारी आवास पांच कालीदास मार्ग से यह ऐलान किया। सीएम ने कहा कि "कई दशक से बढ़ती आबादी पर चर्चा हो रही है। बढ़ती आबादी की वजह से समाज में गरीबी समेत कई बड़ी समस्याएं बढ़ रही हैं।"

मुख्यमंत्री ने कहा कि "उत्तर प्रदेश की जनसंख्या नीति 2021-30 जारी करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। समाज के सभी तबकों को ध्यान में रखकर प्रदेश सरकार इस नीति को लागू कर रही है।" उत्तर प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री जेपी सिंह ने कहा कि "जनसंख्या नियंत्रण जरूरी है। माना जाता है कि हमारी (भारत की) आबादी 2027 तक चीन की जनसंख्या से भी आगे निकल जाएगी।" उन्होंने आगे कहा कि "अगर हम नई जनसंख्या नीति लागू करते हैं, तब हमारे प्रदेश की आबादी 2052 तक स्थिर रहेगी।"



### **सरकार करेगी प्रोत्साहित -**

उत्तर प्रदेश की जनसंख्या फिलहाल लगभग 24 करोड़ बताई जा रही है। रिपोर्टों की मानें तो उत्तर प्रदेश की प्रजनन दर 2.7% है। जो कि 2.1% होनी चाहिए। राष्ट्रीय वृद्धि 2.7 फीसदी की तुलना में उत्तर प्रदेश की वृद्धि दर 3.1 फीसदी है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए सरकार ने नई जनसंख्या नीति लागू करने का मन बनाया है।

इसी के तहत राज्य सरकार "दो बच्चों की नीति" भी लागू कर सकती है। इस नीति को मानने वालों को सरकार प्रोत्साहित करेगी। जबकि इन नियमों का उल्लंघन करने वालों को कई सुविधाओं से वंचित रखा जाएगा। इस कानून को तोड़ने वालों को सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी। यानी प्रदेश का कोई भी व्यक्ति जिसके दो से अधिक बच्चे होंगे उन्हें सरकारी नौकरी नहीं मिल सकेगी। यहीं नहीं इस कानून का उल्लंघन करने वालों के पंचायत चुनाव लड़ने का रास्ता भी बंद हो जाएगा।

ऐसे सरकारी कर्मचारी जिनके सिर्फ दो बच्चे होंगे उन्हें प्रोत्साहन राशि दी जाएगी। जिन सरकारी कर्मचारियों का सिर्फ एक बच्चा होगा उसे भी सरकार की ओर से प्रोत्साहन राशि मिलेगी। साथ ही पूरे कार्यकाल में दो बार अतिरिक्त वेतन वृद्धि भी होगी। इसके अलावा पूरे कार्यकाल के दौरान 12 महीने की छुट्टी भी अधिक दी जाएगी।

### **सपा सांसद के बयान से विवाद -**

उत्तर प्रदेश के सम्बल से समाजवादी पार्टी के सांसद शफीकुर्रहमान बर्क ने जनसंख्या नियंत्रण के मसले पर एक बयान दिया है। जिससे काफी विवाद पैदा हो गया है। शफीकुर्रहमान बर्क ने कहा है कि "यह कानून कुदरत से टकराने वाला होगा और इस कानून से कोई लाभ नहीं होगा।" शफीकुर्रहमान बर्क ने आगे कहा है कि "दुनिया में कितने लोग पैदा होंगे यह तो कुदरत के हाथ में हैं। तेरे मेरे बस में कुछ नहीं है। इसलिए कुदरत से टकराना नहीं चाहिए।"

सोशल मीडिया पर भी इस बिल को लेकर चर्चाचिल रही है।

कुछ लोग इस बिल को बेहद ज़रूरी बता रहे हैं। ऐसे लोगों का तर्क है कि देश में संसाधन सीमित है लेकिन जनसंख्या विस्फोटक रूप से बढ़ती जा रही है। ऐसे में आगे वाले भविष्य में देश के सामने भारी संकट पैदा हो जाएगी। इसलिए जनसंख्या नियंत्रण कानून देश की ज़रूरत है। दूसरी ओर कुछ लोग कानून बनाकर जनसंख्या नियंत्रित करने की कवायद को गलत बता रहे हैं। ऐसे लोगों का कहना है कि बच्चे पैदा करना किसी भी दंपत्ति का निजी अधिकार है। उसमें किसी सरकार को हस्तक्षेप नहीं करनी चाहिए। कानून के जरिए जबरदस्ती यह थोपा नहीं जाना चाहिए।

इन तमाम बहसों के बीच भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने उत्तर प्रदेश और असम में जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए कानून बनाने का मन बना लिया है।



# "ऑक्सीजन की कमी से नहीं हुई किसी की मौत", केंद्र और राज्य सरकारों का फर्जीवाड़ा!



प्रियंका श्रीवास्तव

वैशिक कोटोना महामारी से पूरी दुनिया में अब तक हाहाकार मची हुई है। भारत भी इस बला से अछूता नहीं रहा। 2020 का जनवरी महीना था जब पहली बार भारत में यह घातक मेहमान पथार पड़ा। जिसने पूरे देश की हालत खटाब कर दी। देश में जनवरी के आखिरी में कोटोना संक्रमण का पहला मामला सामने आया था। धीरे-धीरे कोटोना वायरस ने अपने पैर पसाराने शुरू कर दिए। इसी साल मार्च के आखिरी सप्ताह में पूरे देश में तालाबंदी लागू कर दी गई। लेकिन देश में त्राहिमाम तब हुआ जब कोटोना संक्रमण की दूसरी लहर का आगमन हुआ।

इस साल मार्च और अप्रैल में जब कोटोना की दूसरी लहर अपने चरम पर थी तब हर कोई असहाय हो चुका था। इस दौरान देश में बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाओं की पूरी हकीकत सामने आ गई थी। हजारों की संख्या में लोग अस्पताल में भर्ती पाने के लिए और छोटी-छोटी दवाइयों के लिए तड़पकर मर गए। इन सब के बीच देश भर में 'ऑक्सीजन संकट' देखने को मिला। मीडिया में ऑक्सीजन की कमी के कारण होने वाली मौतों की खबरों का अंबार लगा था। बड़े-बड़े अस्पताल ऑक्सीजन की कमी के कारण लोगों को भर्ती नहीं कर रहे थे। जिसके चलते कितने ही लोगों ने अस्पतालों के बाहर ही तड़प-तड़प कर अपना दम तोड़ दिया। चारों तरफ ऑक्सीजन के लिए भागदौड़ जारी थी।

लेकिन अब केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार ने कहा है कि ऑक्सीजन की कमी से किसी की भी मौत नहीं हुई है। केंद्र सरकार ने संसद में ये बयान दिया है कि कोटोना काल के दौरान किसी भी व्यक्ति की मौत ऑक्सीजन

की कमी से नहीं हुई है। सरकार का कहना है कि राज्य सरकारों ने ऑक्सीजन की कमी से कोई भी मृत्यु दर्ज नहीं की है। संसद में स्वास्थ्य राज्य मंत्री डॉ. भारती प्रवीण पवार ने एक सवाल का जवाब देते हुए कहा है कि "स्वास्थ्य राज्य का विषय है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को मृत्यु की रिपोर्टिंग के लिए विस्तृत दिशा निर्देश जारी की गई थी। इसी आधार पर नियमित रूप से राज्यों ने कोटोना के मामलों की रिपोर्टिंग की है। इस तरह ऑक्सीजन की कमी से कोई भी मौत राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा दर्ज नहीं की गई है।" लगभग यही बात स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मंडाविया ने भी दोहराई। मंडाविया ने कहा कि "कोटोना के मामलों का आंकड़ा राज्य सरकारों को देना था। हर दिन के सभी आंकड़े राज्यों से ही आते थे। केंद्र सरकार के जिसे सिर्फ इन आंकड़ों के प्रकाशन का काम था। केंद्र सरकार ने किसी राज्य सरकार पर कभी कोई दबाव नहीं बनाया कि वे आंकड़े लुपाएं।"

## मई की कहानी क्या कहती है?

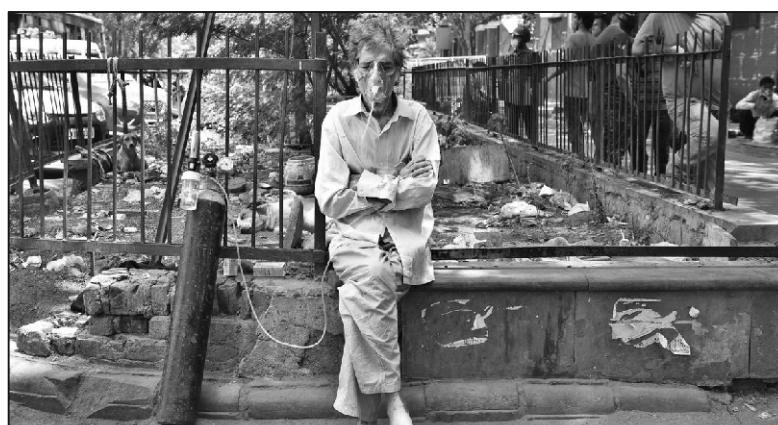
मई के महीने के अखबारों के कागज स्वास्थ्य सुविधाओं की किल्लत से जान गंवाने वाले लोगों की लाशों से अंटा पड़ा था। सिर्फ मई के ही महीने में जाने कितने ही लोगों के दिशेदारों की सांस उखड़ गई थीं। हरियाणा सरकार ने 5 अप्रैल से 1 मई के बीच ऑक्सीजन की कमी के कारण हुई

कम से कम 19 मौतों की जांच के आदेश दिए थे। ऐवाड़ी के विराट अस्पताल से चार, गुडगांव के कथूरिया अस्पताल से चार, हिसार के सोनी बर्न से पांच और गुडगांव में कृति अस्पताल से छह मौतें रिपोर्ट की गई थीं।

वहीं गोवा की मीडिया रिपोर्टर्स के मुताबिक 11 से 15 मई के बीच ऑक्सीजन संबंधित कारणों के चलते गोवा में कम से कम 83 लोगों की मौत हो गई थी। 11 मई को ही राज्य के सबसे बड़े कोविड सेंटर गोवा मेडिकल कॉलेज व अस्पताल में सबसे ज्यादा 26 कोटोना मरीजों की जानें चली गई थी। जिसे लेकर राज्य के स्वास्थ्य मंत्री ने खुद ही अपनी सरकार पर सवाल उठाए थे।

एक अन्य रिपोर्ट के मुताबिक आंध्र प्रदेश के तिलपति थहर में 10 मई को लड़ाया सरकारी अस्पताल में ऑक्सीजन सप्लाई में प्रेशर की कमी से 11 मरीजों की मौत हो गई। ये सभी मरीज वैटलेट सपोर्ट पर थे।

वहीं कर्नाटक के चामटाजनगर में 3 मई को ऑक्सीजन की कमी के चलते 24 से ज्यादा मरीजों की मौत हो गई। इनमें 23 कोटोना संक्रमित और एक अन्य बीमारी से पीड़ित मरीज शामिल था।



महाराष्ट्र के नासिक से खबर आई थी कि नासिक में 21 अप्रैल को डॉक्टर जाकिर हुसैन अस्पताल में ऑक्सीजन न मिलने के कारण 22 मरीजों की मौत हो गई क्योंकि ऑक्सीजन लीक हो गई थी। ऑक्सीजन लीक होने के कारण अस्पताल में कठीब आधे घंटे तक सप्लाई बाधित रही थी। इसके अलावा पालघर जिले के वसई में ऑक्सीजन की कमी के कारण 13 अप्रैल को कम से कम 10 मरीजों की मौत हो गई।

दिल्ली में ऑक्सीजन की कमी से हुई मौतें और उन पर केंद्र की भाजपा सरकार और दिल्ली की अरविंद केजरीवाल सरकार के बीच हुई विवाद किसे याद नहीं होगा? दिल्ली के जयपुर गोल्डन अस्पताल में 23 अप्रैल को ऑक्सीजन की कमी से 25 मरीजों की मौत हो गई। अस्पताल प्रशासन ने मौत के पीछे ऑक्सीजन प्रेशर में कमी को कारण बताया था। इसके बाद जयपुर गोल्डन अस्पताल ने ऑक्सीजन सप्लाई में लगातार कमी को लेकर दिल्ली हाईकोर्ट का भी छख किया था। हाईकोर्ट में दिल्ली सरकार ने एपोर्ट दाखिल करते हुए कहा कि अस्पताल में मौत ऑक्सीजन की कमी से नहीं हुई थी। इससे पहले सर जंगाराम अस्पताल में 23 अप्रैल को वर्क पर ऑक्सीजन नहीं मिल पाने की वजह से 25 मरीजों की मौत हो गई थी। 1 मई को ऑक्सीजन की कमी के चलते बत्रा अस्पताल में 12 कोरोना मरीजों की मौत हो गई। मृतकों में एक अस्पताल के एक डॉक्टर भी शामिल थे। सभी मरीज अस्पताल के आईसीयू यूनिट में भर्ती थे।

### सियासी टीका टिप्पणी का दौर -

केंद्र सरकार की ओर से राज्यसभा में दिए

गए इस बयान पर तुरंत ही तीखी टीका-टिप्पणी शुरू हो गई। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष और वायनाड सांसद राहुल गांधी ने इस मामले पर द्वीप करते हुए लिखा कि "सिर्फ ऑक्सीजन की ही कमी नहीं थी।

मिनिस्टर विश्वास सारंग ने कहा है कि उनके राज्य में ऑक्सीजन की कमी से कोई मौत नहीं हुई है। वहीं बिहार के स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडे ने केंद्र सरकार के साथ सुर में सुर मिलाते हुए कहा कि "दूसरी लहर के



संवेदनशीलता व सत्य की भारी कमी- तब भी थी, आज भी है।" इसके बाद राहुल गांधी ने एक वीडियो शेयर करते हुए लिखा कि "सब याद रखा जाएगा।" राहुल गांधी ने जो वीडियो द्वीप किया था उसमें ऑक्सीजन की कमी से हुई मौतों के खबरों की तस्वीरें थीं। ऑक्सीजन की कमी से किसी की मौत नहीं हुई गाले बयान पर पैदा हुए विवाद पर भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता संबित पात्रा ने एक प्रेस कांफ्रेंस कर राहुल गांधी और कांग्रेस पर झूठ की राजनीति करने का आरोप लगाया। संबित पात्रा ने कहा कि "महाराष्ट्र में कांग्रेस के गठबंधन वाली सरकार चल रही है। महाराष्ट्र सरकार ने अदालत में खुद ही कहा है कि ऑक्सीजन की कमी से कोई मौत नहीं हुई है।"

दूसरी ओर कई राज्य सरकारों ने केंद्र सरकार के इस बयान पर हामी भरी। मध्यप्रदेश के मेडिकल एजुकेशन

दौरान हम दबाव में थे लेकिन इसके बावजूद बेहतर प्रबंधन किया।" उन्होंने कहा कि "हमें केंद्र का पूरा सहयोग मिला और हमें ऑक्सीजन भी पर्याप्त मात्रा में मिला। हमने सभी अस्पतालों में ऑक्सीजन दिया था।"

केंद्र सरकार के समर्थन में खड़े राज्यों में सबसे ज्यादा चौकाने वाला बयान छत्तीसगढ़ से आया। छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य मंत्री टी. एस. सिंहदेव ने कहा कि "ये सच है कि छत्तीसगढ़ में ऑक्सीजन की कमी से कोई मौत नहीं हुई। छत्तीसगढ़ ऑक्सीजन सरप्लस वाला राज्य था।" जौरतलब है कि छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार है। एक कांग्रेस शासित राज्य के स्वास्थ्य मंत्री नरेन्द्र मोदी सरकार के बयान का समर्थन किया। जबकि कांग्रेस पार्टी के पूर्व अध्यक्ष और वायनाड सांसद राहुल गांधी द्विटर पर केंद्र सरकार के खिलाफ इस मुद्दे पर मोर्चा खोले हुए हैं।

## तब क्यों दिल्ली के अस्पताल गए थे हाईकोर्ट?

अगर पूरे देश में कहीं भी ऑक्सीजन की कमी नहीं हुई थी तो सवाल ये है कि दिल्ली के अस्पतालों ने अदालत का ठख क्यों किया था? आपको याद ही होगा कि दिल्ली के बत्रा अस्पताल, जयपुर गोल्डन हॉस्पिटल और महाराजा अग्रसेन अस्पताल ने अपने यहां भर्ती कोविड-19 मरीजों का जीवन बचाने के लिए तत्काल अदालती हस्तक्षेप की मांग की थी। अस्पतालों ने अदालत को सूचित किया था कि उनका ऑक्सीजन स्टॉक 30 मिनट से कुछ घंटों तक चलेगा। बल्कि जयपुर गोल्डन अस्पताल ने तो 23 अप्रैल को ऑक्सीजन की कमी से 25 मरीजों की मौत होने बाद अदालत का ठख किया था।

ऑक्सीजन की कमी से हुई मौतों के इस विवाद पर दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र

जैन का कहना है कि सरकार ने संसद में जो जवाब दिया है वह बिलकुल गलत है। उन्होंने कहा कि अगर ऑक्सीजन की कमी से कोई मौत नहीं हो रही थी, तो अस्पताल लिए हाईकोर्ट क्यों जा रहे थे? उन्होंने कहा कि दिल्ली समेत देश के कई स्थानों पर भी ऑक्सीजन की कमी हुई थी। हमने दिल्ली के भीतर ऑक्सीजन की कमी से होने वाली मौत पर मुआवजा देने के लिए कमेटी बनाई थी। जिसको उप राज्यपाल ने नामंजूर कर दिया था। अगर वो कमेटी बनी होती तो आज सही आंकड़ा मिल जाता।

"ऑक्सीजन की कमी से किसी की भी जान नहीं गई" ये कहना ठीक वैसा ही है जैसे कह दिया जाए कि हिटलर के जर्मनी में लाखों यहूदियों का नरसंहार नहीं हुआ। ये कहना ठीक वैसा ही है जैसे कह दिया जाए कि हिन्दुस्तान की आजादी के बहुत लाखों लोग साम्रादायिकता की भेंट नहीं चढ़े।

केंद्र सरकार ने यह कहकर अपना पल्ला झाड़ लिया कि राज्य सरकारों ने ऑक्सीजन की कमी से मरने वाले लोगों का आंकड़ा नहीं दिया। लेकिन क्या केंद्र सरकार सिर्फ इस तर्क के आधार पर अपनी जिम्मेदारी से बच सकती? क्या केंद्र सरकार का ये बयान इस देश के लोगों के साथ धोखाधड़ी नहीं है? क्या जिन लोगों की मौत ऑक्सीजन न मिलने के कारण हो गई उनके साथ ये एक अत्याचार नहीं है?

क्या अब उन लोगों की मृत्यु के कारण को भी झूठलाया जायेगा? उस दौरान के समाचार पत्रों के पन्जे ऐसी ही खबरों से भरी हुई थीं। जो इस बात की गवाही है कि संक्रमण की दूसरी लहर के दौरान हजारों लोगों ने दम तोड़ दिया था। वो पन्जे इस बात की भी गवाही है कि केंद्र सरकार झूठ बोल रही है।



# न्यूज़ बकेट के कैमरे ने कैद की गांव की असल जिंदगी!



**बभनपुरा गाँव में खूब हैं तालाब लेकिन पानी के लिए तरस रहे गाँव के लोग**

गांव से जिला बनता है, जिले से राज्य और राज्य से देश। कहा जाता है कि गांव देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। अभी भी भारत की 70 फीसदी आबादी गांव में रहती है। न्यूज़ बकेट की टीम ने अपने खोजी लेस में तस्वीरों को थोड़ा जूम करके जो देखा वही हकीकत हम आपको बताने जा रहे हैं।

बात है उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले की। यहां की स्थिति ऐसी है कि एक ही जिले में

राजनीतिक परिस्थिति अलग-अलग है। मतलब संसदीय क्षेत्र के मामले में थोड़ा घालमेल है। एक तरफ जहां बनारस का जिक्र होता है तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का संसदीय क्षेत्र सबसे पहले जुबान पर चढ़ जाता है। बनारस के सुदूर इलाकों में रहने वाले लोग इससे असहज महसूस करते हैं। 2009 के परिसीमन के बजह से बनारस का कुछ हिस्सा चंदौली लोकसभा क्षेत्र में सम्मिलित हो चुका है। जब हमारी टीम

शिवपुर विधानसभा क्षेत्र के चिरईगांव ब्लॉक में पहुंची तो कुछ हैरान करने वाली तस्वीरें कैद हुईं।

आजादी के 75वीं वर्षगांठ के जश्न की तैयारियां थूँथ हो चुकी हैं। भारत सरकार झूमकर अमृत महोस्तव मना रही है। लेकिन एक कड़वी हकीकत और थर्मसार करने वाली तस्वीर यह है कि एक गांव जिसका नाम बभनपुरा है वहां पीने के पानी के लिए लोग तरस रहे हैं। कभी कभार तो वहां पानी की लिए दिंसा भी भड़क उठती है। गांव के एकाध रसूख लोगों ने जमीन के नीचे बहती निम्नलिखित पानी पर मानो कब्जा कर लिया है। कोई सरकारी चापाकल नहीं है। सुबह उठते ही गांव की महिलाएं और बच्चे पीने के पानी का प्रबंध करने में जुट जाते हैं।

हमारी पढ़ताल में कोई ऐसा गांव नहीं मिला जिसमें पानी समस्या न हो। किसी गांव में पीने की, किसी में नहाने की, किसी में बहाने की। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं की भारत के गांवों में पानी के लिए युद्ध छिड़ सकता है। कमोवेश यही हाल राज्यों का भी है। राज्य भी पानी के बटवारे के लिए लड़ रहे हैं। ताजे उदाहरण में दिल्ली और हरियाणा का झगड़ा जग जाहिर है। गांव की विस्तृत रिपोर्ट आप हमारे यू ट्यूब चैनल पर देख सकते हैं।

अब दूसरा सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा स्वास्थ्य का है। जब हमारी टीम चिरईगांव ब्लॉक के गोबरहांग गांव में पहुंची तो तबाही का ऐसा मंजर दिखा की आपको पहली नजर में यकीन ही नहीं होगा।



**देल्हना गाँव में इंज्ञिनियरिंग एडमिनिस्ट्रेशन एवं जनरल रेजिस्ट्रेशन का दर्शक दरवाज़ा**



## कीचड़ की सड़क पर चलने को मजबूर मिसिरपुरा के लोग

यूपीए की सरकार में 2006-07 में बना प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र अब दम तोड़ चुका है। सालों से वहां न तो डॉक्टर आ रहे हैं न ईलाज की कोई मुकम्मल व्यवस्था हो पाई है। कभी-कभार डॉक्टर साहब ने दर्थनि भी दे दिये तो एक लोपाए की पर्ची पर कुछ दवाओं का नाम लिख हाथ जोड़ लेते हैं। यानी दवा बाहर से लेनी पड़ती है। जब हमने पूरे परिसर को देखा तो माथा चक्रागया। महिलाओं के प्रसव के नाम पर बने जच्चा-बच्चा केंद्र अब

आस्तित्व खो चुका था। वहां झाड़ियों का अंबार लग चुका है। वहीं एक वार्ड बॉय मिला जो होमियोपैथिक दवा की निगरानी में लगाये गया है। जहां उसके बैठने का प्रबंध था वहां की दीवारें व छत जब तब धराशायी होने को आतुर हैं। कभी भी बड़ा हादसा हो सकता है। गांव के लोगों ने बताया की यहां ईलाज न होने से शहर जाना पड़ता है। इससे एक तो आने-जाने की समस्या ऊपर से प्राइवेट अस्पतालों की जेबकरण की लत

ने जीना मुहाल कर दिया है। कायदे से यहां इतने संसाधन हो सकते थे की छोटी-मोटी बिमारियों का ईलाज आसानी से किया जा सकता है। लेकिन सिस्टम की अनदेखी ने सब चौपट कर दिया है।

जब हम जवाब लेने चिरट्टिंग ब्लॉक पहुंचे तो वहां हमारी मुलाकात सहायक खण्ड विकास अधिकारी से हुई क्योंकि मुख्य खण्ड विकास अधिकारी नदारद रहे। उन्होंने

बताया कि अभी कायलिय में उनका पहला दिन है इसलिए पहले तो यह सब समझने में ही कुछ वक्त जुनर जायेगा। सो सात खून माफ वाली स्थिति थी।

यह एक गांव की तस्वीर नहीं है लगभग हर गांव ऐसा दंश झोल रहा है। कुछ हमारी टीम के रडार में आ गए बाकी अभी भी कितने ही गांव कैमरे की नजरों से ओझाल हैं।



**टिकटी गांव में नहीं मिल रहा आवास तो ढूटे खपड़ेल में बीत रही जिंदगी**

# रातोंरात तबाह हुआ 6 सुपरस्टार्स का करियर! कहीं छोटी सी भूल तो कहीं हादसे ने करवाया पैकअप

ममता कुलकर्णी से लेकर शाइनी आहूजा तक, इन फिल्म स्टार्स से हर किसी को बहुत उम्मीदें थीं। जब इन सेलेब्स ने फिल्मी दुनिया में कदम रखे तो अपने धमाकेदार फिल्मी सफर से सबको डम्प्रैस कर दिया था। लगने लगा था कि ये लंबे समय तक स्क्रीन के साथ-साथ लोगों के दिलों पर राज करेंगे। लेकिन फिर इनकी जिंदगी में कुछ ऐसा हुआ जिससे इनका करियर रातोंरात तबाह हो गया। मेहनत से जो स्टारडम, जो झटबा कमाया था वो रातोंरात मिट्टी के ढेट में बदल गया।

## फरवीन खान

एक्टर फरदीन खान से भी बहुत उम्मीदें थीं। स्टार पिता फिरोज खान के बेटे फरवीन ने 1998 में फिल्म 'प्रेम अगन' से डेब्यू किया था। फिल्म हिट रही और इसके लिए फरदीन खान को फिल्मफेयर का बेस्ट डेब्यू अवॉर्ड भी दिया गया। आगे वाले वर्ष में फरदीन खान कई फिल्मों में नजर आए, लेकिन साल 2001 में जब फरदीन खान को कोकीन खटीदने की कोशिश करने के

आरोप में गिरफतार किया गया तो सब बदल गया। पल भर में उनका स्टारडम फर्थीपर आ गया। बताया जाता है कि फरदीन खान ने उस वर्त फिल्म हंडस्ट्री में फिर से कदम जमाने की खूब कोशिश की, लेकिन बात नहीं बनी। तब फरदीन ने 2010 में एक्टिंग से ब्रेक ले लिया और फैमिली लाइफ में बिजी हो गए। तब से लेकर आज तक फरदीन खान फिल्मों से दूर हैं और एक्टिंग से भी।



## शाइनी आहूजा

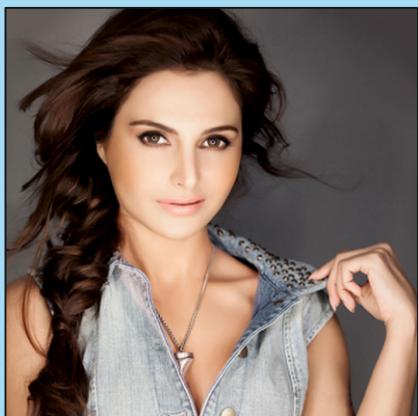
एक्टर शाइनी आहूजा जब फिल्मों में आए थे तो उनसे बहुत उम्मीदें थीं। वह उन उम्मीदों पर खटे भी उतरे। पहली ही फिल्म 'हजारों ख्वाहिशें ऐसी' के लिए शाइनी आहूजा ने फिल्मफेयर का बेस्ट मेल डेब्यू अवॉर्ड भी जीता। पहली सुपरहिट देने के बाद से ही हर निमिता-निर्देशक की नजरें शाइनी आहूजा पर टिक गईं। फिर उन्होंने 'गैंगस्टर', 'वो लम्हे' और 'लाइफ इन ए मेट्रो' जैसी हिट फिल्में दीं। लेकिन एक घटना हुई और उसने रातोंरात ही शाइनी आहूजा के करियर को चौपट कर दिया। शाइनी आहूजा ने 2005 में फिल्मों में डेब्यू किया था और 2009 में उन्हें अपनी नौकरानी के रेप के आरोप में गिरफतार कर लिया गया। गिरफतारी के 2 साल बाद यानी 2011 में शाइनी आहूजा को 7 साल जेल की कैद सुना दी गई। तब से शाइनी आहूजा फिल्मों के साथ-साथ थोबिज से भी दूर हो गए।



## ममता कुलकर्णी

कुछ ऐसा ही हाल 90 के दशक की स्टार एक्ट्रेस रहीं ममता कुलकर्णी का भी हुआ। 90s में ममता कुलकर्णी की गिनती बॉलिवुड की टॉप एक्ट्रेसेस में होती थी। उन्होंने 'करण अर्जुन', 'वर्क हमारा है', 'सबसे बड़ा खिलाड़ी', 'बाजी' और 'चाहना गेट' जैसी कई बेहतरीन फिल्में दीं। लेकिन जिंदगी में की गई एक गलती ममता कुलकर्णी का करियर ले डूबी। ममता कुलकर्णी का नाम गैंगस्टर छोटा राजन के साथ जोड़ा जाने लगा। इसके बाद साल 2016 में करोड़ों की इफ्रेडिन ड्रग स्मगलिंग मामले में भी ममता कुलकर्णी और इंटरनैशनल ड्रग स्मगलर द्याम विजय गिरी उर्फ विकी गोस





### मोनिका बेदी

कई हिंदी फिल्मों में नजर आई ऐक्ट्रेस मोनिका बेदी का भी करियर अच्छा चल रहा था। वह हिंदी फिल्मों के अलावा साउथ सिनेमा में भी काम कर रही थीं। लेकिन अंडरवर्ल्ड डॉन अबू सलेम के साथ कनेक्शन और फिर गिरफतारी ने उनके करियर को ग्रहण लगा दिया। अबू सलेम के साथ मोनिका बेदी का नाम क्या जुड़ा, चंद पलों में ही उनका फिल्मी करियर गर्त में चला गया। अबू सलेम टंग उनकी लव स्टोरी ने खूब सुर्खियां बटोरीं।



### मनीषा कोइराला

सुभाष घई की फिल्म 'सौदागर' से शार्टोंगात स्टार बनीं मनीषा कोइराला करियर में अच्छा कर रही थीं। अच्छी फिल्मों के ऑफर मिल रहे थे और फिल्में हिट भी रही थीं।

लेकिन कुछ साल बाद मनीषा की जिंदगी में एक ऐसा भी मौका आया जब उन्होंने शराब को गले लगा लिया और वही चीज उनके करियर को ले डूबी।

बताया जाता है कि 1999 में फिल्म 'लावारिस' के दौरान मनीषा कोइराला ने अपने बिजी शेड्यूल और स्ट्रेस को दूर करने के लिए शराब का सहारा लेना शुरू कर दिया। वह बात-बात पर गुस्सा करने लगीं और उनका बतर्वा भी बदल गया। इसके बाद उन्हें कम फिल्में मिलने लगीं। ये ऑफर तब और घट गए जब मनीषा कोइराला 2012 में ओवेरियन कैंसर की गिरफत में आई। मनीषा कोइराला ने कैंसर से ठीक होने के बाद फिल्मों में वापसी तो की, पर वैसा चार्म और सक्सैस हासिल नहीं कर पाई जो करियर की शुरूआत में की थी।

दाऊद के साथ अफेयर का कुछ कनेक्शन होने से इनकार कर दिया। लेकिन बताया जाता है कि उसी कनेक्शन के कारण मंदाकिनी से फिल्ममेकर्स ने कन्नी काठनी शुरू कर दी। मंदाकिनी को मिलने वाले फिल्म ऑफर कम हो गए और एक वक्त ऐसा भी आया जब उनके पास फिल्में ही नहीं बचीं। तब मंदाकिनी ने 1996 में फिल्म 'डंडरी' छोड़ दी। फिल्माल वह पति के साथ मिलकर योग सिखाती हैं।

### मंदाकिनी

ऐक्ट्रेस मंदाकिनी को लोग आज भी 'राम तेरी गंगा मैली' फिल्म के लिए याद करते हैं। मंदाकिनी ने साल 1985 में 'मेरा साथी' से बॉलिवुड में डेब्यू किया था। लेकिन पहली फिल्म कुछ खास नहीं चली। तभी राज कपूर की नजर मंदाकिनी पर पड़ी और उन्होंने ऐक्ट्रेस को फिल्म 'राम तेरी गंगा मैली' में कास्ट किया। इसके बाद तो मंदाकिनी के पास फिल्मों की लाइन लग गई। उन्होंने कई और हिट फिल्में कीं। पर मंदाकिनी के करियर और लाइफ में उस वक्त मुश्किलें आ गईं जब उनका नाम अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद डब्राहिम के साथ जुड़ा। ऐसी खबरें आने लगीं कि मंदाकिनी का दाऊद डब्राहिम के साथ अफेयर चल रहा है। तब साथ में उनकी कुछ तस्वीरें भी सामने आई थीं। हालांकि मंदाकिनी ने





# सुनील पाल ने मनोज बाजपेयी को कहे अपशब्द, बोले- 'द फैमिली मैन', 'मिजपिट' जैसी सीटीज भी हैं अलील

एकदेश थिल्पा थेटी के व्यवसायी पति राज कुंद्रा की अलील फिल्म से जुड़े एक मामले में गिरफतारी पिछले एक हफ्ते से पूरे देश में चर्चा का विषय बना हुआ है। इस सबपर कॉमेडियन और अभिनेता सुनील पाल ने भी रिएक्ट किया है। सुनील पाल ने 'द फैमिली मैन' और 'मिजपिट' जैसी वेब सीटीज पर सवाल खड़े किए हैं। और कहा है कि डिजिटल प्लेटफॉर्म पर ले लोग कमजोर सेंसरशिप का फायदा उठाते हैं।

## मनोज बाजपेयी पर भड़के कॉमेडियन-

बॉलीवुड हंगामा की रिपोर्ट के अनुसार एक कार्यक्रम में मीडिया से बात करते हुए, सुनील पाल से कुंद्रा की फत्तारी पर पूछा गया। तो कॉमेडियन

राज

गिर

न ने



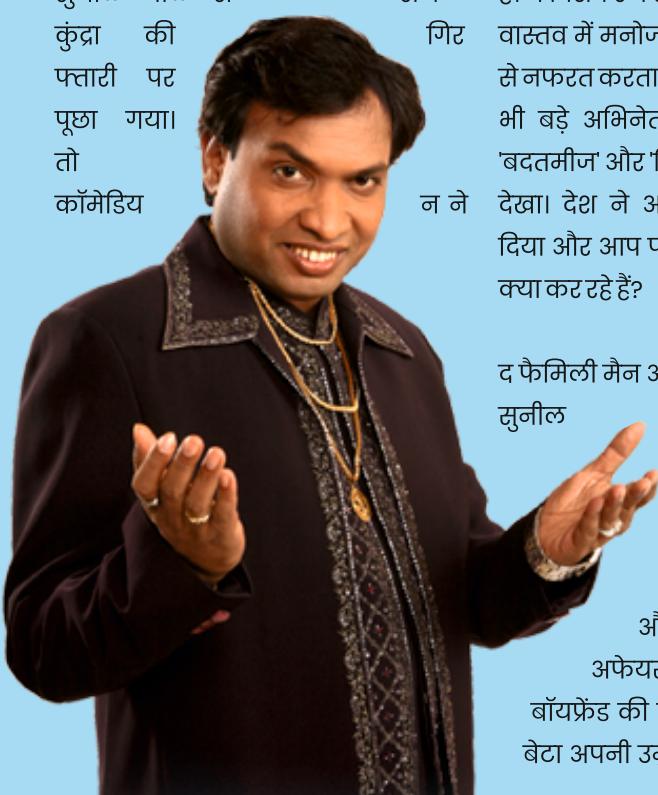
अपने बेबाक अंदाज में कहा, "जो कुछ हुआ, वह होना ही था, और यह ज़रूरी था। मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूं क्योंकि बड़े लोग चाहे वेब सीटीज हो या दूसरी जगह सेंसरशिप न होने का फायदा उठा रहे हैं। इन दिनों बन रही वेब सीटीज को घर पर नहीं देखा जा सकता है। मैं विशेष ढंप से यह बताना चाहूंगा कि मैं वास्तव में मनोज बाजपेयी जैसे 3-4 लोगों से नफरत करता हूं। मनोज बाजपेयी कितने भी बड़े अभिनेता हों, मैंने इससे अधिक 'बदतमीज' और 'गिरा हुआ इंसान' कभी नहीं देखा। देश ने आपको राष्ट्रपति पुरस्कार दिया और आप पारिवारिक दर्शकों के लिए क्या कर रहे हैं?"

द फैमिली मैन और मिजपिट भी हैं अलील सुनील पाल ने आगे कहा- आप एक वेब सीटीज बनाते हैं जहाँ पल्ली का किसी दूसरे पुलष के साथ अफेयर चल रहा हो और आपका कहीं और अफेयर हो, नाबालिंग बेटी अपने बॉयफ्रेंड की बात कर रही है और छोटा बेटा अपनी उम्र से बड़ा व्यवहार कर रहा

है। क्या ऐसा दिखता है एक परिवार? अब उन्होंने लोगों को इस सवाल के साथ छोड़ दिया है कि लोनावाला में क्या हुआ। क्या हो रहा है? आपके पास दिखाने के लिए क्या बचा है?" सुनील पाल राज और डीके की लोकप्रिय अमेजन प्राइम वीडियो ओरिजिनल सीटीज द फैमिली मैन सीजन 1 का जिक्र कर रहे थे। थो का सीजन 2 इस साल जून में रिलीज हुआ था।

इसके बाद आता है थो मिजपिट, जो जिसमें यहीं सब दिखाया गया है। मुझे उनसे बहुत नफरत है। इन सब पर बैन लगना चाहिए क्योंकि ये भी अलील हैं। अलील केवल वह नहीं हैं जो हम देखते हैं बल्कि विचारों की आलीलता होती है।"

सुनील पाल ने इस तरह के एडल्ट फिल्म ऐकेट का भंडाफोड़ करने के लिए पुलिस को बधाई दी। उन्होंने बड़े डिजिटल प्लेटफॉर्म के मालिकों पर गंदगी फैलाने का भी आरोप लगाया और कहा कि ऐसे लोगों को एक कमरे में बंद करके 100 दिन तक पीटना चाहिए।



# उत्तर प्रदेश की 'सियासत का सूरमा' बनने की कवायद में लगे ओमप्रकाश राजभर से ख़ास बातचीत!

उत्तर प्रदेश के 2022 विधानसभा चुनाव में अब महज कुछ महीने बचे हैं। सभी राजनीतिक दल अब मैदान में उत्तरने को तैयार हैं। लेकिन चुनावी मैदान में टकराने से पहले हट दल बंद करने में रणनीति बना रही है और मीडिया में नेता खुलकर बयान दे रहे हैं। कहते हैं कि जंग के मैदान में उत्तरने से पहले अपने हृथियाओं की धार तेज की जाती है। उत्तर प्रदेश में फिलहाल यही धार तेज करने का काम चल रहा है। छोटे नेताओं और कार्यकर्ताओं को निर्देश दिए जा रहे हैं। भाजपा का आलाकमान पूरी तरह सक्रिय हो चुका है। सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव का भी दौरा थ्रू हो चुका है। प्रियंका गांधी वाड़ा भी लखनऊ आकर संगठन पर चर्चाकर गई हैं। लेकिन इन सब के बीच एक नेता है जिसने सियासी समीकरणों को पूरी तरह दिलचस्प बना दिया है। भाजपा के पुराने सहयोगी और भाषीदारी संकल्प मोर्चा का गठन करने वाले सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ओमप्रकाश राजभर। बीते माह न्यूज़ बकेट की टीम ने ओमप्रकाश राजभर से बातचीत की, पेश है इस ख़ास बातचीत के प्रमुख अंश -



**प्रश्न-** आपको पांच साल में पांच मुख्यमंत्री और बीस उप मुख्यमंत्री का फार्मूला क्यों तैयार करना पड़ा?

लोहार, अकंवंथी, गोंड, प्रजापति, पाल, राजभर, बंजारा समेत पिछड़े समाज के लोगों को पहले कोई नहीं जनता था। मगर अब यह पिछड़े समाज के लोग जिनकी आबादी 43 फीसदी है। यह लोग अब जाग चुके हैं। अब यह कहते हैं कि हम दूसरे की सरकार नहीं बनाएंगे। अगर हम दूसरे को सीएम बना सकते हैं तो हम क्यों नहीं बन सकते? जिसके बाद हमने अध्ययन किया कि 6-6 महीने का समझौता उत्तर प्रदेश में बसपा और भाजपा ने सीएम के लिए किया था। 2 डिप्टी सीएम यूपी में, 3 डिप्टी सीएम बिहार में और 5 डिप्टी सीएम आंध्र प्रदेश में तो हमने कहा कि जब लोगों में जागृति हो

रही है राजनीति का चर्का लेने का तो क्यों न बंजारा को, बहेलिया को, अकंवंथी को, लोहार को, गोंड को, कुम्हार को, कथयप को, राजभर को, प्रजापति को, पाल को डिप्टी सीएम बनाया जाए। ताकि जब यह लोग गाड़ी लेकर निकलेंगे और आगे पीछे गाड़ी होगी तब लोग पूछेंगे कि कौन बिशदर (जाति)? तब पता चले कि लोहार जा रहा है और अब बंजारा और अब बहेलिया।

**प्रश्न-** उत्तर प्रदेश में आप छोटी जातियों को सीएम और डिप्टी सीएम बनाने का सपना दिखा रहे हैं। कहीं इस आइ में आप वोट की राजनीति तो नहीं कर रहे हैं? आपकी बातचीत ममता बनर्जी, उद्घव ठाकरे से भी हो रही है।

जिन जातियों की गिनती नहीं थी उन जातियों की गिनती हमने करा दी। इनको भटोसा दिलाने के लिए यह लोग यहां आएंगे। ममता दीदी, उद्घव ठाकरे, केजटीवाल यहां सरकार बनवाने आएंगे। यह लोग इन को ताकत देने आ रहे हैं, ऊर्जा देने आ रहे हैं कि तुम कमजोर नहीं हो। तुम्हारे पास वोट है और वोट से सरकार बनती है। तुम डटे रहो हम तुम्हारे साथ हैं।

**प्रश्न-** समाजवादी पार्टी से गठबंधन को लेकर इतनी बेकराटी क्यों है?

मैंने समाजवादी पार्टी का नाम नहीं लिया। समाजवादी पार्टी के पास वोट कहां है? 9% तो यादव हैं। जिसमें से एक हजार यादव तो मेरे साथ हैं सिर्फ वाराणसी जिले में ही।





**प्रश्न-** क्या ओवैसी और आपके गठबंधन के बाद अखिलेश आपसे बातचीत के लिए मजबूर होंगे? क्योंकि आप मुस्लिम - यादव समीकरण को साधने की जुगत कर रहे हैं। हालांकि ओवैसी का जादू बंगाल में बिल्कुल नहीं चला!

बंगाल का वातावरण दूसरा है, बिहार का वातावरण दूसरा है और यूपी का दूसरा है। दिल्ली का रास्ता यूपी से होकर जाता है। जबकि लखनऊ का रास्ता इन्हीं पिछड़ों - दलितों - मुसलमानों से होकर जाता है। बोट देगा पिछड़ा और मुख्यमंत्री बनेंगे उत्तराखण्डी? मगर अब उत्तराखण्डी नहीं बल्कि जो खंड-खंड में बंटे हुए हैं वो बनेंगे मुख्यमंत्री।

**प्रश्न-** आप लोग जाति पर जोर दे रहे हैं। लेकिन युवा चाहते हैं कि नेता शिक्षा और रोजगार पर बात करें? ये मुद्दे आपकी प्राथमिकता में कहाँ हैं?

हमारी पहली प्राथमिकता शिक्षा है। सामान्य शिक्षा, अनिवार्य शिक्षा और फ्री शिक्षा पिछले 19 वर्षों से मैं इस बात के लिए

ललकार रहा हूं। आज भी चुनौती देता हूं बीजेपी को जो भारत में चीन को उपभोक्ता बाजार में माल बेचने का लाइसेंस दे रखा है, आज लाइसेंस निरस्त कर दे तो करोड़ों युवाओं को रोजगार मिलेगा भारत में। मगर बीजेपी नहीं चाहती कि करोड़ों युवाओं को रोजगार मिले, इनका रोजगार छीनना चाहती है। नोट बंदी कर के इसका प्रमाण दे दिया है मोदी जी ने और तो और सीना ठोक के कहते हैं मोदी जी कि 3 लाख कंपनी हमने बंद कर दी है। उन फैक्ट्रियों में गटीब-कमजोर पिछड़े समाज के लोग काम करते थे। निर्मला सीतारमन ने सदन में बयान दिया है कि 6 लाख कंपनी बंद कर दिया है। एमए, पीएचडी, एम. कॉम, बी.कॉम किये बच्चे मनरेगा में काम कर रहे हैं।

**प्रश्न-** वाराणसी में कुल 8 विधानसभा सीटें हैं। लेकिन आपका दावा है कि आप यहाँ से 7 सीटें जीत जाएंगे। आठवें सीट पर आपका दावा क्यों नहीं है?

अभी एक सीट पर हमारी तैयारी नहीं है। दक्षिण की सीट पर हमारी तैयारी नहीं है। हम तैयारी में लगे हैं।

**प्रश्न-** योगी सरकार के लिए कोई सवाल है आपका?

योगी से अगर आपकी मुलाकात हो जाये तो उनसे मेरे यह सवाल पूछ लीजियेगा। 1700 थाने में पिछड़ों को कितना हिस्सा दिया गया? 826 ब्लॉकों में से कितना हिस्सा दिया गया? 75 जिले हैं कितना हिस्सा दिया आपने? 69 हजार शिक्षक भर्ती में 5844 पर 27% आरक्षण से क्यों लूटे? बांदा में कृषि विभाग में 13 में 11 ठाकुर क्यों भर्ती किया गया? बस यही 4 सवाल पूछ लीजियेगा।

इस अंक में बस इतना ही, आप अपने सुझाव हमे ई-मेल के जरिये साझा कर सकते हैं। हमारा ईमेल है -

m@fivealphabets.com



ओम प्रकाश राजभर  
(राष्ट्रीय अध्यक्ष, मुभासपा)

# सीमा विवाद की आग में झुलसता असम और मिजोरम, गृह मंत्रालय बेखबर!

भारत का पूर्वी हिस्सा अक्षर विवादों की आग में झुलसता ही रहता है। ये और बात है कि पूर्वोत्तर की समस्या पर कथित मुख्यधारा का ध्यान कम ही जाता है। भारत की मुख्यधारा पूर्वोत्तर की उलझनों पर उतनी ठचि नहीं लेती है जितना कठमीर के

26 जुलाई को असम और मिजोरम में हिंसक टकराव हो गया। हिंसा भी इस कदर कि असम के छह पुलिसकर्मियों को अपनी जान गंवानी पड़ी। असम के मुख्यमंत्री हेमंत बिस्वा सरमा ने द्वीप कर इस खबर की पुष्टि की। बता दें कि पिछले साल भी अक्टूबर

करते हैं। दोनों राज्य एक-दूसरे के दावे को अर्थीकार करते रहे हैं। इसी कारण समय-समय पर मिजोरम और असम के नागरिक टकराते रहते हैं। वर्तमान समय में दोनों राज्यों की सीमा लगभग 165 किलोमीटर लम्बी है।



विवाद पर। इसकी एक वजह ये भी है कि कठमीर का विवाद एक तो सांप्रदायिक खुराक देता है। दूसरा कठमीर के विवाद में एक बड़ा पक्ष पाकिस्तान होता है, जिससे राष्ट्रवाद की भावना बलवती होती है। लेकिन पूर्वोत्तर के मसले में भारत के ही राज्य होते हैं, जिसमें न धर्म का पेंच खुलकर सामने आता है और न ही पाँडी मूल्क के खिलाफ राष्ट्रवाद की भावना ही फूटती है। आइये समझते हैं कि आखिर क्यों इन दिनों मिजोरम और असम आपस में टकरा गए हैं और एक दूसरे के पुलिस जवानों पर गोलियां बरसा रहे हैं?

महीने में मिजोरम और असम में सीमा विवाद को लेकर हिंसा हुई थी। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक इस हिंसा में तकीबन आठ लोगों की मौत हो गई थी, जबकि कई घरों में आग लगाने की भी घटना सामने आई थी।

## क्या है विवाद?

भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में अक्षर सीमा को लेकर विवाद हुए रहता है। मिजोरम और असम के बीच बॉर्ड को लेकर ही झगड़ा फूटा हुआ है। दोनों राज्य अपनी अपनी सीमा क्षेत्रों को लेकर अलग दावे

मिजोरम और असम का विवाद बहुत ही पुराना है। इसकी जड़ें ब्रिटिश भारत में जगी हैं।

मिजोरम पहले असम का ही एक जिला हुआ करता था, जिसका नाम था लुथाई हिल्स। 1875 में ब्रिटिश सरकार की ओर से एक दिशा निर्देश जारी किया गया, जिसके बाद लुथाई हिल्स असम से अलग हो गया। इसके बाद 1933 में एक अन्य दिशा निर्देश जारी हुआ, इस साल जो दिशा निर्देश जारी हुआ उसमें लुथाई हिल्स और मणिपुर के बीच एक सीमा को टेकांकित किया गया था।



1875 और 1933 के दिथा निर्देश ही विवाद के वजह हैं। मिजोरम के लोग 1875 के नोटिफिकेशन को मानते हैं। जबकि असम के लोग 1933 के नोटिफिकेशन को मानते हैं। मिजो नेताओं और लोगों का मानना है कि 1933 का नोटिफिकेशन बनाते हुए उनकी शाय नहीं ली गई थी।

असम को 1950 में राज्य का दर्जा मिला था। दरअसल आजादी के बाद पूर्वोत्तर भारत में उथल पुथल भरा दौर रहा। सीमाओं में काफी बदलाव किए गए, लेकिन स्थिति कभी स्थाई नहीं हो सकी। उस दौर में पूर्वोत्तर में कुछ नए राज्यों का गठन किया गया, जिससे असम की सीमा कम होती गई।

इस ताजा टकराव के बाद केंद्र सरकार भी सवालों के घेरे में है। सवाल ये है कि आखिर इस विवाद कि भनक गृह मंत्रालय को क्यों नहीं थी? समय रहते गृह मंत्री अमित शाह ने कोई कदम क्यों नहीं उठाया? इंटेलिजेंस को इस मामले की खबर क्यों नहीं थी? क्या भारत के ही दो राज्यों में इस तरह का

### **आजादी के बाद भी अनसुलझा रहा विवाद -**

15 अगस्त, 1947 को भारत आजाद हो गया, लेकिन आजादी के बाद भी लम्बे समय से पूर्वोत्तर की समस्याएं नहीं सुलझायी जा सकीं। आजादी के लगभग 41 साल बाद 1986 में स्टेट ऑफ मिजोरम एक्ट पास किया गया, जिसके बाद 1987 में मिजोरम को एक अलग राज्य बना दिया गया। वहीं

### **क्यों भड़की हिंसा? -**

असम के मुख्यमंत्री हेमंत बिस्वा सरमा के अनुसार मिजोरम रिजर्व फारेस्ट इलाके में जबरन कब्जा जमा रहा है, जिसका विरोध असम के सुरक्षा बलों ने किया। इसी बात पर विवाद बढ़ गया, जिसके परिणाम में असम पुलिस के छह पुलिस वालों की मौत हो गई और कई लोग घायल भी हो गए।

टकराव आम बात है? जबकि दोनों राज्यों में एक ही राजनीतिक दल (भारतीय जनता पार्टी) की सरकार भी है। केंद्र में भी भाजपा की ही सरकार है। राजनीतिक स्थायित्व होने के बावजूद असम और मिजोरम के बीच हुआ ये विवाद अपने साथ कई सवालों को जन्म देता है।

# आईपीएल के बचे हुए 31 मैच का थोड़ा और चेन्नई सुपर किंग्स और मुंबई इंडियंस के बीच!

बीसीसीआई ने आईपीएल फेज-2 के थोड़ा और खेल की घोषणा कर दी है। आईपीएल 2021 के बाकी बचे 31 मैच 19 सितंबर से संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में खेले जाएंगे। फेज-2 का पहला मैच 19 सितंबर को मुंबई इंडियंस और चेन्नई सुपर किंग्स के बीच खेला जाएगा। 27 दिन के अंदर सभी 31 मुकाबले खेले जाएंगे। इसमें से दुबई में 13, शारजाह में 10 और अबू धाबी में 8 मुकाबले होंगे।

इस दौरान 7 डिलर हेडर्स (एक दिन में 2 मुकाबले) भी होंगे। समय की बात करें, तो पहला मैच भारतीय समयानुसार दोपहर 3:30 बजे से और डिलर हेडर में दूसरा मैच शाम 7:30 बजे से खेला जाएगा। लीग स्टेज का आखिरी मुकाबला रॉयल चैलेंजर्स बैंगलुरु और दिल्ली कैपिटल्स के बीच 8 अक्टूबर को होगा।

नॉक-आउट राउंड की शुरुआत 10 अक्टूबर से होगी। 10 अक्टूबर को क्वालिफायर-1, 11 अक्टूबर को एलिमिनेटर और 13 अक्टूबर को क्वालिफायर-2 के मैच होंगे। फाइनल 15 अक्टूबर को दुबई में खेला जाएगा। इसके बाद बीसीसीआई को यूएई और ओमान में टी-20 वर्ल्ड कप के लिए आईसीसी को सौंप दिए जाएंगे।

जात हो कि आईपीएल 2021 भारत में ही 9 अप्रैल से शुरू हुआ था। मिड सीजन में सनराइजर्स हैदराबाद के ऋषिमान साहा, दिल्ली कैपिटल्स के अमित मिश्रा, केकेआर के संदीप वॉरियर और वरुण चक्रवर्ती, सीएसके के बॉलिंग कोच लक्ष्मीपति

बालाजी और बैटिंग कोच माइकल हर्टी कोटोना संक्रमित पाए गए थे। ऐसे में 4 मई को 29 मैच के बाद आईपीएल सरपेंट कर दिया था। अब लीग में 31 मैच बाकी हैं। अप्रैल और मई में भारत में कोटोना की दूसरी लहर पीक पर थी।

## आईपीएल के दूसरे फेज में विदेशी प्लेयर्स के खेलने पर सम्पर्क

आईपीएल के बचे हुए मैच में विदेशी खिलाड़ियों के खेलने पर सम्पर्क है। इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड के मैनेजिंग डायरेक्टर एथले जाइल्स पहले ही कह चुके हैं कि आईपीएल के दूसरे

फेज के लिए उनके खिलाड़ी यूएई नहीं जा पाएंगे। इस दौरान इंग्लैंड को काफी देशों के साथ सीरीज खेलना है। ऐसे में ओएन मोर्गन, जोस बटलर समेत कई इंग्लिश प्लेयर्स नहीं खेल पाएंगे।

वहीं ऑस्ट्रेलिया टीम भी श्रीलंका के साथ घरेलू सीरीज खेलेगी। जबकि न्यूजीलैंड को पाकिस्तान के साथ खेलना है। वहीं साउथ अफ्रीका को नीदरलैंड के साथ घरेलू सीरीज में खेलना है। अफगानिस्तान और बांग्लादेश के खिलाड़ी भी नेशनल टीम के साथ होंगे।

**भारतीय खिलाड़ी इंग्लैंड दौरे से दुबई पहुंचेंगे**  
टीम इंडिया के खिलाड़ी फिलहाल श्रीलंका और इंग्लैंड के दौरे पर हैं। श्रीलंका गए खिलाड़ियों को 29 जुलाई को दौरे का आखिरी मैच खेलना है। वहीं, इंग्लैंड गए भारतीय खिलाड़ी 14 सितंबर के बाद लंदन से डायरेक्ट दुबई पहुंचेंगे। आईपीएल फेज-2 के मैच दुबई, अबू धाबी और शारजाह में खेले जाएंगे। इसके बाद ये सभी स्टेडियम टी-20 वर्ल्ड कप के लिए आईसीसी को सौंप दिए जाएंगे।

## दिल्ली कैपिटल्स की टीम पॉइंट्स टेबल में टॉप पर

लीग में फिलहाल दिल्ली कैपिटल्स की टीम टॉप पर है। सीएसके दूसरे और विटाट कोहली की रॉयल चैलेंजर्स बैंगलुरु तीसरे तीसरे नंबर पर है। धोनी की टीम पिछले साल आईपीएल के प्लेऑफ में नहीं पहुंच पाई थी। इस बार फैन्स को धोनी से काफी उम्मीदें होंगी। मुंबई इंडियंस पॉइंट्स टेबल में चौथे नंबर पर है।



# जिस गोल्ड मेडल को जीतने ओलिंपिक में दुनियाभर के एथलीट जुटे हैं, उसमें गोल्ड है भी या नहीं?

टोक्यो ओलिंपिक भारत के लिए बहुत खास रहने वाला है। पहले ही दिन मीराबाई चानू ने वेट लिफ्टिंग में सिल्वर मेडल जीतकर भारत के ओलिंपिक अभियान को बेहतरीन शुद्धआत दी है। इसके अलावा और भी मेडल्स आने की उम्मीद की जा रही है। सबसे गोल्ड मेडल जीतने की उम्मीद है। पर उससे महत्वपूर्ण है ओलिंपिक पोडियम पर पहुंचना और तिरंगे को लहराते हुए देखना।

कोई भी एथलीट जब ओलिंपिक मेडल गले में डालेगा तो कोई यह नहीं पूछेगा कि उसकी कीमत क्या है? वह तो अनमोल है। वह उनके त्याग, समर्पण और कड़ी मेहनत का फल है, जिसकी कीमत नहीं लग सकती। पर सवाल तो उठता है कि ओलिंपिक के गोल्ड मेडल में आखिर गोल्ड कितना होता है। हट चार साल में होने वाले खेलों के महाकुंभ में अपना बेस्ट परफॉर्मेंस देने पहुंचे एथलीट्स उस मेडल की कीमत के बारे में सोचकर प्रयास नहीं करते, बल्कि अपनी श्रेष्ठता साबित करने संघर्ष करते हैं। पर क्या आपको पता है कि ओलिंपिक के गोल्ड या अन्य मेडल कैसे बनते हैं?

## क्या ओलिंपिक का गोल्ड मेडल ज्ञाने से बनाते हैं?

नहीं। पर इसके बाद भी दुनियाभर में ओलिंपिक गोल्ड सबसे बड़ी खेल उपलब्धि है। इसके सामने किसी खेल की विश्व चैम्पियनशिप का खिताब भी कम ही लगता है। पर यह गोल्ड मेडल प्योर गोल्ड से नहीं बनता। यह मेडल सिल्वर का होता है, जिस पर सोने की सिर्फ पॉलिश होती है। 1912 के स्टॉकहोम गेम्स में ही आखिरी बार प्योर गोल्ड के मेडल दिए गए थे। उसके बाद इंटरनेशनल ओलिंपिक कमेटी के तय नियमों के आधार पर मेडल्स बन रहे हैं।

तो फिर ओलिंपिक के मेडल्स कैसे बनते हैं? इंटरनेशनल ओलिंपिक कमेटी के नियम कहते हैं कि गोल्ड मेडल में कम से कम 6 ग्राम सोना होना चाहिए। बाकी हिस्सा तो चांदी का ही होता है। IOC की गाइडलाइन कहती है कि ओलिंपिक मेडल्स का व्यास (डायमीटर) 60 मिमी और मोटाई 3 मिमी होना आवश्यक है।

इसके साथ-साथ इंटरनेशनल ओलिंपिक कमेटी की गाइडलाइन के मुताबिक मेडल के एक तरफ जीत के ग्रीक देवता नाइकी की तस्वीर होना चाहिए। साथ ही पनाथिनाइकोस स्टेडियम जहां 1896 में पहले ओलिंपिक खेलों की शुद्धआत हुई थी, वह भी होना चाहिए। साथ ही एक तरफ गेम्स का ऑफिशियल लोगो (5 रिंग) और नाम होना चाहिए।

## टोक्यो ओलिंपिक के मेडल्स क्यों खास हैं?

जापान को टेक्जोलॉजिकल एडवांसमेंट के लिए जाना जाता है और उसने अपनी

काबिलियत को मेडल्स पर भी दिखाया है। पुराने इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स को रीसाइकल कर उसमें से पदार्थ निकाले गए हैं। उसका इस्तेमाल मेडल्स में किया गया है। यह जापान के इको-फ्रेंडली होने के प्रति कमिटमेंट को दिखाता है। आम लोगों ने ओलिंपिक मेडल्स बनाने के लिए अपने गैजेट्स दान दिए हैं। इससे उन्हें गेम्स से जोड़ा गया है।

## टोक्यो ओलिंपिक के मेडल्स कैसे डिजाइन किए गए हैं?

आयोजकों ने ज्यादा से ज्यादा जापानियों को जोड़ने के लिए डिजाइन कॉम्पिटिशन आयोजित की थी। 400 एंट्री आई थीं। टोक्यो 2020 के आयोजकों के मुताबिक यह मेडल रफ स्टोन के तौर पर दिखता जाएगा, पर उन्हें पॉलिश किया गया है और वे चमकते हैं। यह 'लाइट' और 'ब्रिलियंस' ही जापान गेम्स की ओवरऑल थीम है। ये मेडल्स लाइट को बेहतरीन तरीके से रिफ्लेक्ट करते हैं, जो एथलीट्स की एनर्जी को प्रदर्शित करता है।



# फेसबुक पर किसने की आपकी प्रोफाइल की छानबीन, इस आसान तरीके से पता लगाएं!

सौथल मीडिया में फेसबुक प्लेटफार्म की अगर बात की जाए तो यह दुनिया के कोने कोने में फैल चुका है, ऐसे में दुनिया का कोई भी इंसान किसी की भी प्रोफाइल को चैक कर सकता है एवं उसके बारे में जानकारी प्राप्त कर सकता है। भारत में भी फेसबुक का डस्टोमाल करोड़ों लोगों द्वारा किया जा रहा है। जहां फैमिली के सदस्य भी इस प्लेटफार्म के माध्यम से एक-दूसरे से कनेक्ट रहते हैं। तो वहीं कुछ अनजान शर्क्स भी आपको फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजते रहते हैं। यह तो आप जानते ही हैं कि फेसबुक के माध्यम से पर्सनल जानकारी कोई भी देख सकता है। ऐसे में कौन हमारी प्रोफाइल चेक कर रहा है इसके बारे में भी आप पता कर सकते हैं।

जी हां एक सिंपल सी ड्रिक के माध्यम से आप यह पता कर सकते हैं कि आपकी प्रोफाइल पर आकर कौन शर्क्स छानबीन कर रहा है। कुछ ही सेकंड में आपको इसकी जानकारी प्राप्त हो सकती है। लेकिन इस ड्रिक का डस्टोमाल करने के लिए आपको सिस्टम या फिर लैपटॉप की आवश्यकता होगी। मोबाइल के माध्यम से आप इस ड्रिक का डस्टोमाल नहीं कर पाएंगे। तो चलिए जानते हैं कि किस तरह से हम इस ट्रिक का डस्टोमाल करते हुए अपनी प्रोफाइल पर आए लोगों का पता लगाएं?

2. फेसबुक लॉग-इन करने के बाद आपको अपनी प्रोफाइल पर जाना होगा।
3. अब आप राइट क्लिक करेंगे तो आपको कई विकल्प नजर आएंगे।
4. लेकिन आपको View Page Source पर जाना होगा।
5. अब आप C T R L + F करके आप BUDDY\_ID सर्च कीजिए।
6. उसके आगे 15 डिजिट होगा उसे आपको कॉपी करना होगा।
7. अब आपको <https://www.facebook.com/15> डिजिट डालने होंगे।
8. अब सर्च करने के बाद जिसने भी आपकी प्रोफाइल को देखा है वह आपके सामने आ जाएगा।



# कैसे सुरक्षित रखें अपना पासवर्ड, क्या कहते हैं गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई? पढ़ें पूरी खबर!

गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई ने कहा है कि नई पीढ़ी को टेक्नोलॉजी सीखना और जिम्मेदार रहना ज़रूरी है। आगे चलकर यह हमारी जिंदगी में महत्वपूर्ण हिस्सा बनने वाला है। उन्होंने आगे यह भी कहा कि हमें हमेशा टेक्नोलॉजी को लेकर डायरा गया है, लेकिन यह नुकसानदेह नहीं है। पिचाई से यह सवाल पूछा गया कि वो अपने बच्चों को कितने समय तक स्क्रीन के सामने रहने का और फोन या दूसरे गैजेट चलाने का समय देते हैं तो इसके जवाब में उन्होंने कहा कि गैजेट के साथ समय बिताने का फैसला व्यक्तिगत होता है, वो इसमें टोक-टोक नहीं करते हैं।

भारतीय मूल के सुंदर पिचाई बीबीसी के साथ बातचीत कर रहे थे, जब उन्होंने ये बातें कहीं। उन्होंने इस हंटरव्यू में गैजेट से जुड़ी

अपनी आदतों के बारे में बताया। आमतौर पर ऐसे दिग्गजों की आदतें हमें बहुत कुछ सिखाती हैं। इस लिए इन आदतों के बारे में जानना आपके लिए भी ज़रूरी है।

## पासवर्डबलने पर क्या बोलें?

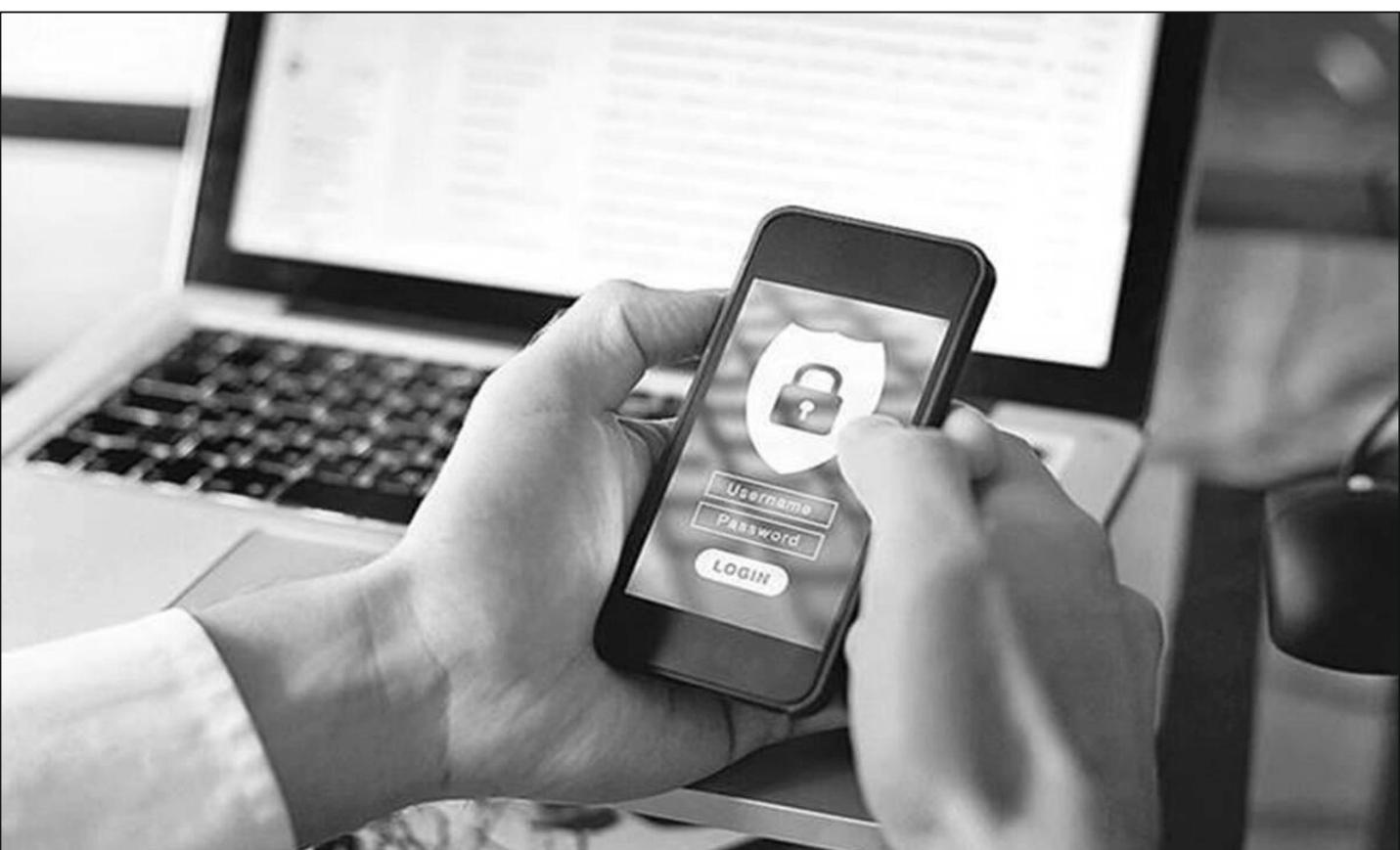
सुंदर पिचाई से जब यह पूछा गया कि वह अपना पासवर्ड कितने समय में बदलते हैं, तो उन्होंने कहा कि वह अपना पासवर्ड बार-बार नहीं बदलते। इसकी बजाय सेफटी के लिए उन्होंने टू-फैक्टर ऑथेंटिकेशन अपनाने की सलाह दी है। इससे कई तरह की सिक्योरिटी मिलती है और बार-बार पासवर्ड बदलने पर आप या तो पासवर्ड भूल जाते हैं या फिर कन्यफ्यूज हो जाते हैं कि अभी आपने कौन सा पासवर्ड लगा रखा है।

## सुंदर पिचाई के पास कितने फोन?

सुंदर पिचाई के पास कितने फोन हैं। इस सवाल के जवाब में उन्होंने बताया कि वो 20 ज्यादा फोन का इस्तेमाल करते हैं। हालांकि हर फोन का इस्तेमाल अलग काम के लिए होता है। उन्होंने कहा "मैं लगातार फोन बदल देता हूं और नये-नये फोन आजमाता रहता हूं, और समय-समय पर इनकी टेस्टिंग करता रहता हूं।"

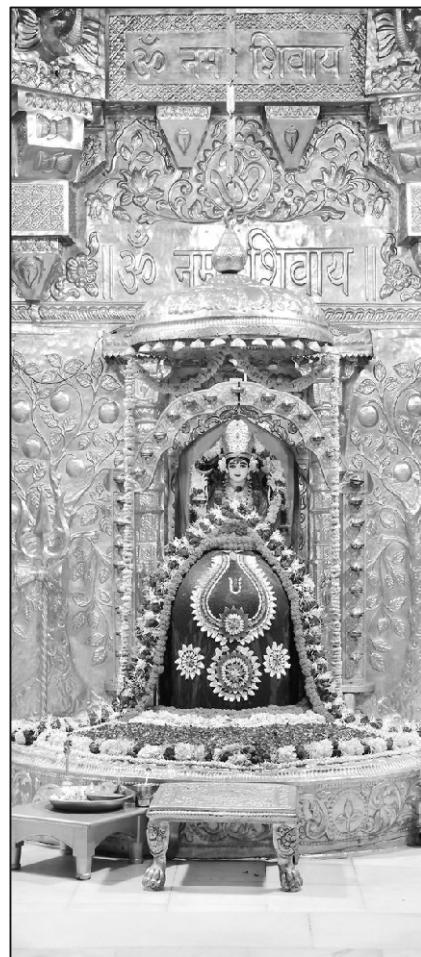
## एआई पर क्या सोचते हैं पिचाई?

सुंदर पिचाई ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के बारे में कहा कि यह टेक्नोलॉजी सबसे महत्वपूर्ण और क्रांतिकारी टेक्नोलॉजी है, जिसे इंसानों ने बनाया है। इसकी तुलना बिजली या इंटरनेट जैसे आविष्कारों से की जा सकती है, लेकिन कभी बार यह इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण लगता है।



# ये हैं भगवान शिव के 12 ज्योतिलिंग, यहां करें दर्शन!

भारत में कई शिव मंदिर और शिव धाम हैं लेकिन 12 ज्योतिलिंगों का महत्व सबसे अधिक है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इन 12 ज्योतिलिंगों में ज्योति ढप में भगवान शिव स्वयं विराजमान हैं। देश के अलग-अलग भागों में शिव के ये पावन ज्योतिलिंग स्थित हैं। ऐसा माना जाता है, 12 ज्योतिलिंगों के दर्शन मात्र से ही सभी पापों का नाश हो जाता है। आइए, जानते हैं देश में कहां-कहां पर स्थित हैं भगवान शिव के ये 12 ज्योतिलिंग..



## 1. सोमनाथ ज्योतिलिंग (गुजरात)

गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र में स्थित सोमनाथ ज्योतिलिंग को पृथकी का पहला ज्योतिलिंग माना जाता है। यहां पर देवताओं द्वारा बनवाया गया एक पवित्र कुंड भी है, जिसे सोमकुण्ड या पापनाशक-तीर्थकहते हैं।



## 2. मल्लिकार्जुन ज्योतिलिंग (आंध्रप्रदेश)

मल्लिकार्जुन ज्योतिलिंग आंध्र प्रदेश में कृष्णा नदी के तट पर श्रीशेल नाम के पर्वत पर स्थित है।



## 3. महाकालेश्वर ज्योतिलिंग (मध्यप्रदेश)

मध्य प्रदेश स्थित के उज्जैन में महाकालेश्वर ज्योतिलिंग स्थित है। ये एक मात्र दक्षिणमुखी ज्योतिलिंग है। यहां प्रतिदिन होने वाली भर्मारती विश्व भर में प्रसिद्ध है।



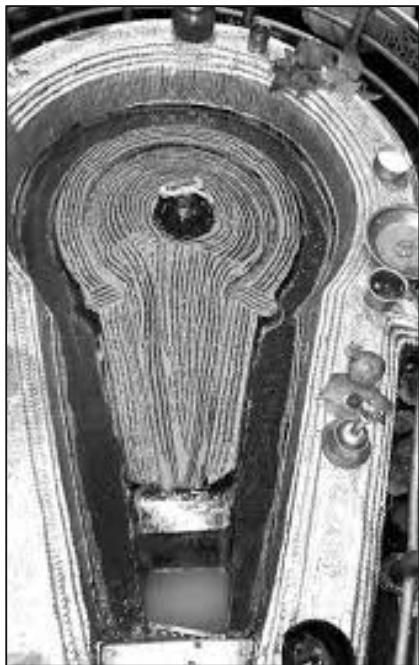
## 4. ओंकारेश्वर ज्योतिलिंग (मध्यप्रदेश)

मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में शिव का यह पावन धाम स्थित है। इंदौर शहर के पास जिस स्थान पर यह ज्योतिलिंग है, उस स्थान पर नमीदा नदी बहती है और पहाड़ी के चारों ओर नदी बहने से यहां ऊँ का आकार बनता है।



## 5. केदारनाथ ज्योतिलिंग (उत्तराखण्ड)

केदारनाथ स्थित ज्योतिलिंग उत्तराखण्ड में दिमालय की केदार नामक चोटी पर स्थित है। बाबा केदारनाथ का मंदिर बद्रीनाथ के मार्ग में स्थित है। केदारनाथ समुद्र तल से 3584 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।



#### 6. भीमाशंकर ज्योतिलिंग (महाराष्ट्र)

भीमाशंकर ज्योतिलिंग महाराष्ट्र के पूणे जिले में सह्याद्रि नामक पर्वत पर स्थित है।



#### 7. बाबा विश्वनाथ ज्योतिलिंग (उत्तर प्रदेश)

बाबा विश्वनाथ का यह ज्योतिलिंग उत्तर प्रदेश की धार्मिक राजधानी माने जाने वाली वाराणसी शहर में स्थित है।

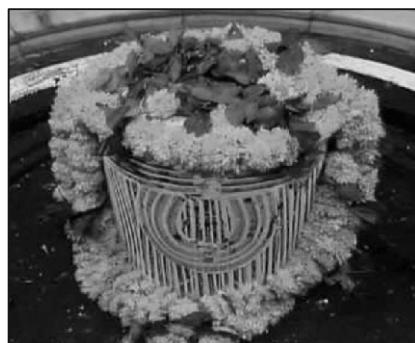
#### 8. त्र्यंबकेश्वर ज्योतिलिंग (महाराष्ट्र)

त्र्यंबकेश्वर ज्योतिलिंग महाराष्ट्र के नासिक जिले में स्थित है। त्र्यंबकेश्वर ज्योतिलिंग के निकट ब्रह्मागिरि नाम का पर्वत है। इसी पर्वत से गोदावरी नदी थुरु होती है।



#### 9. वैद्यनाथ ज्योतिलिंग (झारखंड)

वैद्यनाथ ज्योतिलिंग झारखंड प्रांत के संथाल पटगाना में जसीडीह टेलवे स्टेशन के करीब स्थित है। धार्मिक पुराणों में शिव के इस पावन धाम को चिताभूमि कहा गया है।



#### 10. नागेश्वर ज्योतिलिंग (गुजरात)

नागेश्वर ज्योतिलिंग गुजरात के बड़ौदा क्षेत्र में गोमती द्वारका के करीब स्थित है। धार्मिक पुराणों में भगवान शिव को नागों का देवता बताया गया है और नागेश्वर का अर्थ होता है नागों का ईश्वर। द्वारका पुरी से नागेश्वर ज्योतिलिंग की दूरी 17 मील की है।



#### 11. रामेश्वरम ज्योतिलिंग (तमिलनाडु)

भगवान शिव का यह ज्यारहवां ज्योतिलिंग तमिलनाडु के रामनाथम नामक स्थान में स्थित है। रामेश्वरतीर्थ को ही सेतुबंध तीर्थ भी कहा जाता है। मान्यता है कि इस ज्योतिलिंग की स्थापना स्वयं भगवान श्रीराम ने की थी। भगवान श्री राम द्वारा स्थापित किए जाने के कारण इस ज्योतिलिंग को भगवान राम का नाम रामेश्वरम दिया गया है।



#### 12. घुमेश्वर ज्योतिलिंग (महाराष्ट्र)

घुमेश्वर ज्योतिलिंग महाराष्ट्र के संभाजीनगर के समीप दौलताबाद के पास स्थित है। भगवान शिव के 12 ज्योतिलिंगों में से यह अंतिम ज्योतिलिंग है। इस स्थान को शिवालय भी कहा जाता है।

**मेष-** मेष राशि के लिए कई बदलावों वाला रहेगा 2021 का अगस्त माह। पारिवारिक, व्यावसायिक, सामाजिक, आर्थिक स्थितियों में कई बदलाव आएंगे। 13 अगस्त से 24 अगस्त के बीच यह सब अधिक होगा। कई बार आपको अपने कार्य से चिड़चिढ़ाहट भी होगी और आप उसे बदलना चाहेंगे, लेकिन बदलाव तभी करें जब आप पूरी तरह उसके अच्छे-बुरे पक्षों से परिचित हो जाएं।

**वृषभ-** वृषभ राशि के लिए अगस्त 2021 माह अनिश्चितता वाला रहेगा। जो भी करेंगे उसमें सफलता मिलेगी या असफलता, कुछ भी निश्चित नहीं रहेगा। बहुत सी घटनाएं अचानक हो सकती हैं। लज्जन स्थान का राह अनेक परेशानियां देगा लेकिन लाभ भी देगा। नौकरीपेशा लोगों को अचानक कोई खुशखबरी मिल सकती है। स्थान परिवर्तन के साथ प्रमोशन के भी चांस हैं।

**मिथुन-** राशि के जातकों के लिए यह माह विशेष लाभदायक और श्रेष्ठप्रद रहेगा। पारिवारिक, सामाजिक जीवन में प्रतिष्ठा-सम्मान में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। अचानक कहीं से बड़ा धन लाभ हो सकता है। संपत्ति में निवेश करेंगे और पुराने निवेश से लाभ अंजित करेंगे। करियर में उतार-चढ़ाव का दौर अब थमने वाला है। नौकरी और कारोबार में स्थायित्व आएगा।

**कर्क-** इस माह का प्रथम सप्ताह आपके लिए थोड़ा परेशानी भरा हो सकता है। मानसिक झंझावातों से गुजरना पड़ेगा। हालांकिबाद के समय में लज्जन स्थान में बने बुधादित्य योग का पूरा लाभ मिलेगा और आपके जीवन की गाड़ी बेहतीर तरीके से चल पड़ेगी। पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति में लाभ अंजित करेंगे।

**सिंह-** आपकी राशि में बना हुआ थुक्र-मंगल का योग गलत कार्यों की ओर प्रवृत्त करने का प्रयास करेगा लेकिन संयम और मयदा में रहकर आप इससे बच सकते हैं। किसी के बहुकावे में न आएं और कोई भी काम अनुभवी लोगों के मार्गदर्शन में ही करें। कम समय में ज्यादा पैसा कमाने के चक्कर में गलत धंधे में फंस सकते हैं। नौकरीपेशा को स्थान परिवर्तन करना पड़ेगा।

**कन्या-** जातक अगस्त माह में खर्च को लेकर मितव्यिता बढ़ते। अनावश्यक खर्च करने से बचें। हालांकिपारिवारिक कार्यों और त्योहारों पर खर्च अधिक होने की संभावना बन रही है। पारिवारिक मेलजोल और मांगलिक प्रसंगों में समय व्यतीत होगा। सामाजिक, आर्थिक, स्वास्थ्य जैसी समस्त परिस्थितियों में लाभ की संभावनाएं अधिक हैं। आपका करियर इस माह रफतार भटके वाला है।

**तुला-** इस माह आपको परेशानी अधिक आएंगी। खासकर नौकरीपेशा लोगों को अपने उच्चाधिकारियों से टकराव संभव है, लेकिन आप अपना काम ठीक प्रकार से करते रहें। नकारात्मक बातों की ओर ध्यान न दें। पारिवारिक और सामाजिक जीवन में कोई सम्मान, पल्लिक एक्सपोजर मिलने के चांस अधिक हैं। जो युगा अपने करियर को लेकर चिंतित हैं उन्हें खुश हो जाना चाहिए।

**वृश्चिक-** अगस्त माह वृश्चिक राशि के जातकों के लिए थोड़ा उठापटक वाला और अव्यवस्थित रह सकता है। लज्जन स्थान केरु और सप्तम का राह दोनों आमने-सामने बैठकर परेशानियां बढ़ाएंगे। इसलिए आपके लिए सलाह है कि संयम से काम लें। धैर्यरखें, यह वर्त्त भी गुजर जाएगा। इस माह पारिवारिक जीवन में थोड़ा झंझाट रहेगा।

**धन्-** आपकी राशि के लिए अगस्त माह बेहतर रहेगा। द्वितीय स्थान का शनि आपके हित में रहेगा। अपनी वाणी के दम पर बड़ी जीत हासिल करने में सफल होंगे। पराक्रम भाव का बृहस्पति भी आपको शीर्षस्थ स्थान दिलवाने में मदद करेगा। नौकरीपेशा लोगों को प्रमोशन के साथ स्थानांतरण हो सकता है। उच्चाधिकारी से तालमेल बैठाने में सफल होंगे। नया कारोबार प्रारंभ करने के योग अच्छे हैं।

**मकर-** इस माह आपके सारे काम पूरे होंगे लेकिन उनकी गति धीमी रहेगी। अपने मनमुताबिक काम करने की आजादी रहेगी और आपको पैसों का आगमन अनेक रास्तों से होने वाला है। राशि में उपस्थित स्वामी शनि आपके लिए विशेष शुभ रहेगा। साथ ही द्वितीय भाव का बृहस्पति मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि भी करेगा। लेकिन एक बात का ध्यान रखना होगा।

**कुंभ-** यह माह आपके लिए बेहतर साबित होगा। लंबे समय से चली आ रही जिन परेशानियों से जूँझ रहे हैं वह दूर होंगी। बृहस्पति का आपकी राशि में होना सभी प्रकार से शुभ रहेगा। मान-सम्मान प्रतिष्ठा में बढ़ोतारी होगी। 6 अगस्त से 13 अगस्त के बीच कोई बड़ा अनुबंध या कोई बड़ी योजना साकार होने के योग हैं। करियर बेहतीर रहेगा। विशेष प्रोजेक्ट पर विदेशों की यात्रा करनी पड़ेगी।

**मीन-** संयम, धैर्य, सवाचार, शील, सम्मान, सुख में बढ़ोतारी देने वाला रहेगा। अगस्त माह मीन राशि के जातकों के लिए। आपके सभी संकट दूर होने के योग बन रहे हैं। पैसों की भरपूर आवक के साथ किसी ऐसे नए काम में हाथ आजमाएंगे जो आपको जीवनभर का सुख प्रदान करने में मदद करेगा। प्रेम भी इस माह भरपूर मिलने वाला है।

## किसानों के साथ राहुल गांधी का हाथ, ट्रैक्टर चलाकर पहुंचे संसद भवन

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष और जायनाड सांसद राहुल गांधी ने किसानों के समर्थन में ट्रैक्टर चलाया और दिल्ली के संसद भवन पहुंचे। उनके ट्रैक्टर के आगे एक पोस्टर लगा हुआ था, काले रंग के इस पोस्टर पर "किसान विरोधी, काले कृषि कानून वापस लो, वापस लो" लिखा हुआ था। राहुल गांधी ने अपनी इस प्रदर्शन के दौरान कहा कि "ये किसानों का संदेश है। ये काले कानून हैं, इनको वापिस लेना होगा। सरकार हिन्दुस्तान



के किसानों को दबा रही हैं। ये कानून दो तीन उद्योगपतियों के लिए है। सारा देश जानता है कि ये कानून किसके लिए है? ये कानून वापस लेने होंगे।" उन्होंने कहा कि "सरकार के मुताबिक, किसान को कृषि कानून से कोई दिक्कत नहीं है। सरकार के मुताबिक किसान बहुत खुश है, जो बाहर बैठे हैं वो आतंकवादी हैं।" राहुल गांधी ने इस ट्रैक्टर यात्रा के बाद एक फोटो शेयर करते हुए द्वौट किया कि "अगर खेत बेचने पर मजबूर करोगे, तो ट्रैक्टर संसद में चलेगा - सत्य की फसल उगा कर रहेंगे। कृषि-विरोधी कानून वापस लो।"

## काशी में गंगा-जमुनी तहजीब की मिसाल, मुसलमानों ने काशी विश्वनाथ मंदिर के लिए दी जमीन

काशी विश्वनाथ मंदिर और जानवापी मस्जिद को लेकर काशी में काफी लंबे समय से हिंदू-मुस्लिम विवाद चला आ रहा है। मगर इस विवाद के बीच सावन से पहले मुस्लिम पक्ष ने हिंदू पक्ष को एक बड़ी सौगात दी है। मुस्लिम पक्ष द्वारा की गयी यह पहल इस विवाद में शांति की तरफ एक कदम है। बता दें कि मुस्लिम पक्ष ने मंदिर प्रशासन को जानवापी मस्जिद से सटी जमीन देने का फैसला किया है। मुस्लिम पक्ष द्वारा दी गयी इस सौगात के बाद अब काशी विश्वनाथ कॉरिडोर के लिए 1700 फीट जमीन मिल जाएगी। वहीं अब इस फैसले के बाद मंदिर प्रशासन ने भी बदले में मुस्लिम पक्ष को 1000 स्क्वायर फीट जमीन देने का फैसला किया है। दोनों ही पक्ष के तरफ से किया गया यह फैसला हिन्दू-मुस्लिम एकता का उदाहरण भी माना जा सकता है। बता दें कि काशी विश्वनाथ मंदिर और जानवापी मस्जिद के बीच विवाद का मामला वाराणसी कोर्ट में विचाराधीन है।

## पीएम के संसदीय क्षेत्र में आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं का प्रदर्शन, कहा मीडिया को स्वतंत्रता से करने दें काम

बीते माह आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं द्वारा प्रदेश के सभी जिलों के मुख्यालय पर प्रदर्शन किया गया। वहाँ पीएम के संसदीय क्षेत्र वाराणसी में भी आम आदमी पार्टी के मुख्यालय पर पार्टी के कार्यकर्ताओं द्वारा पूरे दमखम के साथ प्रदर्शन किया गया। साथ ही आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने राज्यपाल को जिलाधिकारी के माध्यम से ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन सौंपकर पार्टी ने अपील की है कि लोकतंत्र के चौथे स्तंभ मीडिया को पूरी आजादी से काम करने दिया जाए। प्रदर्शन के दौरान पार्टी के जिलाध्यक्ष कैलाश पटेल ने कहा कि मीडिया की स्वतंत्रता को बनाये रखने के लिए हमने आज प्रदर्शन किया है। उन्होंने कहा कि सरकार मीडिया की स्वतंत्रता को छिनने का काम कर रही है। पार्टी के जिलाध्यक्ष ने आगे कहा कि वर्तमान सरकार उनके विरुद्ध बोलने वाली मीडिया के खिलाफ जांच लगाकर उन्हें प्रताड़ित करने का काम कर रही है। मीडिया को सरकार की सच्चाई सामने लाने का पूरा हक और सरकार उनसे यह हक न छीने। उन्होंने आगे कहा कि मीडिया की आवाज को दबाना गलत है। साथ ही कहा कि अगर हमारी सरकार आती है तो, हम मीडिया को सरकार द्वारा किये कामों की सच्चाई सामने लाने की पूरी आजादी देंगे।

## डीएम कायलिय पर दिव्यांगों ने डफली बजाकर किया अनोखा प्रदर्शन

वाराणसी के दुर्गाकुंड स्थित हनुमान प्रसाद पोद्दार अंथ विद्यालय पूर्वांचिल का एकमात्र विद्यालय है, जहाँ दृष्टिबाधित छात्र पढ़ते हैं। मगर अब यहाँ भी दृष्टिबाधित छात्रों को निराशा मिल रही है। इस विद्यालय में 250 सीटें होने के बावजूद विद्यालय ने 9वीं कक्षा के बाद एडमिशन लेना बंद कर दिया है। साथ ही विद्यालय के छात्रावास में रह रहे छात्रों को भी वहाँ से निकाल दिया गया। विद्यालय के ऐसा करने के बाद दृष्टिबाधित छात्रों के साथ ही काशी की जनता में भी जबरदस्त आक्रोश देखा गया। इस आक्रोश के बाद विद्यालय के पूर्व छात्रों ने मोर्चा खोल दिया है। छात्रों द्वारा किये गए प्रदर्शन में छात्र डफली बजाते हुए डीएम कायलिय पहुंचे। बता दें कि यह छात्र पिछले एक साल से अपने विद्यालय के लिए लड़ाई लड़ रहे हैं। कुछ दिन पहले इन छात्रों ने जिलाधिकारी को भी पत्र सौंपा था। इन छात्रों का आरोप है कि कुछ लोग फर्जी तरीके से द्रष्टव्य बनकर विद्यालय की बिल्डिंग में शापिंग मॉल बनाना चाहते हैं। इसकी थुकात साइकिल स्टैंड व कपड़े का गोदाम बनाकर ही चुकी है। छात्रों की प्रशासन से अपील है कि इसे पूर्व की भाँति चालू किया जाए।

**NEWS  
TOP  
HEADLINES**

# गौथालाओं की दुर्व्यवस्था पर एकरान में दिखे सीएम योगी, दिया जनरी आदेश

उत्तर प्रदेश में गौथालाओं की दुर्व्यवस्था पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की नजर पड़ी है। सूबे के मुखिया योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश के गौथालाओं की व्यवस्था ठीक करने के लिए बड़ा आदेश दिया है। उन्होंने प्रदेश भर के गौथालाओं की गहनता से जांच करने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री ने संयुक्त निदेशक स्तर के अधिकारियों को सभी जिलों में भेजने के निर्देश दिए हैं। ये अधिकारी जिलों में जाकर सभी गौथालाओं के हालत का जायजा लेंगे। इसके बाद एक फैसले के भीतर सभी अधिकारियों को अपनी रिपोर्ट पेश करनी होगी। इस रिपोर्ट में यह भी बताना होगा कि किन जिलों और किन गौथालाओं में अव्यवस्था के कारण कितने गायों की मौत हुई है। इसके साथ जिम्मेदार लोगों के नाम भी भेजने होंगे ताकि लापरवाही बरतने वालों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जा सके। मुख्यमंत्री का आदेश है कि जिलों के गौथालाओं की रिपोर्ट में वहाँ के समुचित प्रबंधन की जानकारी देनी होगी।

## फोन की जासूसी पर राहुल गांधी ने पीएम पर लगाया राजद्रोह का आरोप

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने पेगासस के जरिए हुई फोन की जासूसी पर मीडिया से संवाद किया। राहुल गांधी संसद भवन से निकलकर विजय चौक पहुंचे। जहां उन्होंने मीडिया के सामने अपनी बात रखी। राहुल गांधी ने कहा कि नरेंद्र मोदी सरकार ने पेगासस का इस्तेमाल भारत के खिलाफ किया। उन्होंने कहा कि इसका इस्तेमाल भारत के संस्थानों के खिलाफ किया गया है। राहुल गांधी ने मीडिया से कहा कि इन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री और गृह मंत्री ने इसका इस्तेमाल भारत की संस्थानों के खिलाफ किया है। राहुल गांधी ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के खिलाफ पेगासस का इस्तेमाल किया गया। रफाल के जांच को टोकने के लिए पेगासस का इस्तेमाल किया गया है।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा कि इसके लिए सिर्फ एक शब्द है - *Treason*, इस शब्द का हिन्दी अर्थ है - राजद्रोह। उन्होंने मांग की है केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह इस्तीफा दें। साथ ही सुप्रीम कोर्ट प्रधानमंत्री के खिलाफ ज्यायिक जांच करें। पेगासस बनाने वाली इंजराय

**NEWS**  
**TOP**  
**HEADLINES**

## केंद्रीय मंत्री ने किसानों को बताया मवाली, बढ़ा विवाद तो बयान लिया वापस

भारत सरकार में केंद्रीय मंत्री मीनाक्षी लेखी ने किसानों को लेकर एक विवादित बयान दिया। मीनाक्षी लेखी ने एक प्रेस कांफ्रेंस के दौरान किसानों

को मवाली



बता दिया। मीनाक्षी लेखी ने एक पत्रकार के सवाल का जवाब देते हुए कहा कि "वो किसान नहीं हैं। मवाली हैं वो।" केंद्रीय मंत्री और भाजपा नेता मीनाक्षी लेखी ने यह बयान 22 जुलाई को दिया। इस बयान के बाद उन्हें खूब आलोचना झेलने को मिली है। विवेद भंत्रालय और संस्कृति भंत्रालय में राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी का यह बयान तब आया जब दिल्ली के जंतर मंतर पर किसान संसद लगी हुई थी। इसी बीच दिल्ली में केंद्रीय मंत्री मीनाक्षी लेखी एक प्रेस कांफ्रेंस को सम्बोधित कर रही थीं। इस दौरान एक पत्रकार ने किसान संसद को लेकर उनसे सवाल किया। लेखी ने पत्रकार को बीच में ही टोकते हुए कहा कि "आप फिर उन्हें किसान कह रहे हैं। मवाली हैं वो। 26 जनवरी को जो हुआ वो आपराधिक कृत्य था। विपक्ष इन चीजों को बढ़ावा दे रहा है।" किसान नेता और भाजपीय किसान यूनियन के राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकैत ने कहा है कि "किसानों के लिए ऐसी टिप्पणी करना गलत है। हम मवाली नहीं हैं।"

कांग्रेस ने भी मीनाक्षी लेखी के इस बयान पर भाजपा को घेरा है। कांग्रेस नेता रणदीप सिंह सुरजेवाला ने द्वीप कर लिया है कि "गाली-जीवी मोदी सरकार, अब हम अन्नदाता मवाली हैं। चुल्लू भर पानी में डूब मरो।" बता दें कि विवाद पैदा होने के बाद मीनाक्षी लेखी ने अपना बयान वापस ले लिया। बाद में उन्होंने एक न्यूज एंजेसी से बातचीत में कहा कि "मेरे बयान को तोड़-मरोड़ कर पेश किया जा रहा है। लेकिन फिर भी अगर मेरे बयान से किसी को ठेस पहुंची हो तो मैं अपना बयान वापस लेती हूं।"



ली कंपनी ने कहा है कि वह सिर्फ सरकारी संस्थाओं को अपना सॉफ्टवेयर बेचती है। इसलिए इसी सरकार के आलावा कोई दूसरा इस्तेमाल कर ही नहीं सकता है।

## सुरेश टैना ने कमेंट्री में दिया ऐसा बयान, भड़क उठे लोग

बीते माह एक स्पोर्ट्स चैनल पर क्रिकेट कमेंट्री के दौरान भारतीय क्रिकेटर सुरेश टैना के एक बयान ने अचानक से विवाद पैदा कर दिया। सुरेश टैना से दूसरे कमेंटर्स ने उनके और चेन्नई के रिश्ते पर सवाल पूछा था। इसी सवाल के जवाब में सुरेश टैना ने कहा कि "मैं सोचता हूं कि मैं भी एक ब्राह्मण हूं। मैं 2004 से चेन्नई में खेल रहा हूं, मुझे यहां की संस्कृति से प्यार है। मुझे अपने टीम के साथियों से प्यार है। मैं अनिष्ट श्रीकांत, बद्रीनाथ, बालाजी के साथ खेल चुका हूं। सीएसके में हमारे पास अच्छा एडमिनिस्ट्रेशन है और यहां हमें खुद को तलाशने को मौका मिलता है। मैं वहां की संस्कृति को पसंद करता हूं और मैं भाग्यशाली हूं कि मैं सीएसके का हिस्सा हूं।" बता दें कि तमिलनाडु प्रीमियर लीग के एक मैच की कमेंट्री के दौरान ही एक कमेंटर ने सुरेश टैना से उनके और चेन्नई के रिश्ते पर सवाल किया था। सुरेश टैना के इस पूछे बयान की पहली लाइन जो उनके लिए मुश्किलें खड़ी कर दी हैं। राष्ट्रीय टेलीविजन चैनल पर "मैं भी एक ब्राह्मण हूं" कहना उनके लिए समर्प्या बन गई है। इसके बाद लोगों ने टैना को ट्रोल करना शुरू कर दिया है। उनसे माफी तक मांगने की बात कही। तो दूसरी ओर भारी संख्या में लोग सुरेश टैना के समर्थन में खड़े हैं। कहा जा रहा है कि राष्ट्रीय टेलीविजन चैनल पर अपनी जाति बताने में कोई दिक्कत नहीं है। टैना के समर्थन में द्वितीय पर #मैंभीब्राह्मण\_हूं का हैशटेग फ्रेंड करने लगा।

## केंद्र सरकार का संसद में जवाब, ऑक्सीजन की कमी से नहीं हुई किसी की मौत

केंद्र की मोदी सरकार ने कहा है कि ऑक्सीजन की कमी से किसी की भी मौत नहीं हुई है। सरकार ने संसद में ये बयान दिया है कि कोटोना काल के दौरान किसी भी व्यक्ति की मौत ऑक्सीजन की कमी से नहीं हुई। सरकार का कहना है कि खास तौर पर राज्य सरकारों ने ऑक्सीजन की कमी से कोई भी मृत्यु दर्ज नहीं की है। संसद में स्वास्थ्य राज्य मंत्री डॉ. भारती प्रवीण पवार ने एक सवाल का जवाब देते हुए कहा है कि "स्वास्थ्य राज्य का मंत्रालय की ओर से सभी राज्यों मृत्यु की रिपोर्टिंग के लिए विस्तृत इसी आधार पर नियमित ढंप से की रिपोर्टिंग की है। इस तरह भी मौत राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों हालांकि केंद्र सरकार के इस बयान जमकर बवाल कर रहा है। लोग पर तीखी प्रतिक्रिया जाहिर कर रहे हैं किसी की मौत नहीं हुई वाले विवाद गांधी ने द्वीप कर लिखा है कि "सिफ़ ऑक्सीजन की ही कमी नहीं थी। संवेदनशीलता व सत्य की भारी कमी- तब भी थी, आज भी है।" तो वहीं भारतीय जनता पार्टी के प्रवक्ता संबित पात्रा ने मंगलवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कहा उल्टा ही गांधी पर निशाना साधा।

## दैनिक भास्कर पर आयकर का छापा, कर चोटी का मामला

दैनिक भास्कर समूह पर आयकर विभाग ने छापा मारा। आयकर विभाग ने दैनिक भास्कर समूह के कई कार्यालयों में छापा मारा। दैनिक भास्कर समूह के भोपाल, नोएडा, जयपुर और अहमदाबाद स्थित कार्यालयों पर छापा पड़ा। न सिफ़ कार्यालयों पर बल्कि दैनिक भास्कर समूह के मालिकों और प्रचारकों के घर पर भी आयकर विभाग की टीम पहुंची। एक मिडिया रिपोर्ट के हवाले से मिली खबर के अनुसार दैनिक भास्कर समूह पर कर चोटी के मामले में यह कार्यवाई की गई बताया जा रहा है कि इनकम टैक्स के अधिकारी



द्वारा दैनिक भास्कर के कार्यालयों पर पूछताछ की गयी। दैनिक भास्कर हिन्दी का बेहद लोकप्रिय अखबार है। जात हो कि कोटोना काल में दैनिक भास्कर की जमीनी रिपोर्टिंग और संपादकीय लेख देशभर में चर्चा के विषय बने हुए थे। दैनिक भास्कर लगातार सरकार के झूठे दावों की पोल खोल रहा था। हालांकि इस पूरे मामले को लोग राजनीतिक रंग देने की भी कोशिश कर रहे हैं।



## नाम की स्पेलिंग गलत होने पर यौन शोषण का आटोपी बटी, उच्च न्यायालय ने लगाई फटकार

तमिलनाडु से एक अंजीबोगटीब घटना सामने आई। यहां दो साल की एक बच्ची के साथ यौन शोषण करने वाले आटोपी को पॉक्सो न्यायालय से बटी कर दिया गया। आटोपी को इस वजह से बटी कर दिया गया था कि पीड़िता की माँ द्वारा दिए गए बयान में आटोपी का नाम गलत लिख दिया गया था। नाम की स्पेलिंग गलत होने के चलते अदालत ने आटोपी को बटी कर दिया। बता दें कि आटोपी का नाम पीड़िता की माँ ने तमिल में 'टीमेन' बताया लेकिन अंग्रेजी में इसे 'टेमेन' के रूप में लिख दिया गया। ये गलती टाइपिस्ट ने की थी। आटोपी के वकील ने पॉक्सो कोर्ट में नाम अलग होने की दलील दी थी। जिस पर अदालत सहमत हो गया। इसके खिलाफ पीड़िता की माँ ने तमिलनाडु के मद्रास उच्च न्यायालय में याचिका दाखिल की। मद्रास हाई कोर्ट ने इस मामले की सुनवाई करते हुए पॉक्सो अदालत का फैसला पलट दिया। मद्रास हाई कोर्ट ने कहा कि ऐसा लग रहा है कि द्रायल कोर्ट भी कभी-कभी अपने दिमाग का इस्तेमाल नहीं कर रहे हैं। मद्रास हाई कोर्ट ने कहा कि इस मामले में पीड़िता सिफ 2 साल की है, ऐसे में वो खुद अपने साथ हुए घटना का विवरण नहीं दे सकती है। ऐसे में उसकी माँ के ही बयान के आधार पर कार्रवाई की जाएगी। ये मामला लगभग चार साल पहले का है। जात हो कि 2017 में पीड़िता की माँ अपनी बच्ची को पड़ोसी के घर छोड़कर बाजार गई हुई थी। तभी पड़ोसी ने सिफ 2 साल की बच्ची का यौन शोषण किया था।

## व्हाट्सएप ने बंद किए 20 लाख अकाउंट, रहें सचेत वरना अगला नंबर आपका

नए आईटी नियमों के लागू होने का ठज्जान सामने आने लगे हैं। फेसबुक के स्वामित्व वाली मैसेंजर एप्प व्हाट्सएप ने बड़ी कार्रवाई की है। व्हाट्सएप ने भारत में 20 लाख खातों पर पाबंदी लगा दी है। जी हां, 20 लाख व्हाट्सएप अकाउंट बंद कर दिए गए हैं। वजह है आईटी नियमों का उल्लंघन। व्हाट्सएप ने एक बयान जारी कर यह जानकारी दी है। कंपनी ने बताया है कि सिफ एक महीने में 20 लाख से ज्यादा व्हाट्सएप अकाउंट पर टोक लगा दी गई है। संख्या 20,11,000 है। कंपनी का कहना है कि को बैन किया गया है। जाटिर है कि +91 लगभग 80 लाख से ज्यादा व्हाट्सएप खातों गए खातों का 25 फीसदी अकाउंट भारत के आपत्तिजनक सामग्री भेजने पर ऐसी नुकसान पहुंचाने वाले मैसेज भी आपके हैं। व्हाट्सएप के जरिए किसी व्यक्ति को धमकी देना भी आपके लिए मुश्किल खड़ी कर सकती है। इसलिए आगे से व्हाट्सएप पर कोई भी मैसेज भेजते हुए या फिर किसी फॉरवर्ड मैसेज को आगे बढ़ाते हुए उसे एक बार गौर से ज़रूर पढ़ लें। संदिग्ध मैसेज होने पर उसे आगे किसी को न भेजें। वरना इन 20,11,000 लोगों की तरह आप भी अपने व्हाट्सएप से हाथ धो बैठेंगे।

## पत्रकारिता करते हुए तालिबान हमले में भारतीय फोटो पत्रकार की मृत्यु

भारतीय फोटो पत्रकार दानिश सिद्दीकी की अफगानिस्तान के कंधार शहर में मौत हो गई। कंधार के स्पिन बोल्डक जिले में हुए एक हमले में दानिश सिद्दीकी की मृत्यु हो गई। दानिश सिद्दीकी यहां अफगानी सेना और तालिबानी लड़ाकों के बीच चल रहे जंग की रिपोर्टिंग कर रहे थे। खबरों के मुताबिक तालिबान द्वारा किए गए हमले में उनकी मौत हो गई। दानिश सिद्दीकी अंतर्राष्ट्रीय न्यूज एजेंसी रॉयटर्स के चीफ फोटो पत्रकार थे। अपनी खींची गई तस्वीरों



थे।

के लिए उन्हें पुलिंजर पुरस्कार मिल चुका था, जो कि पत्रकारिता जगत का बड़ा पुरस्कार है। बता दें कि अफगानिस्तान में अफगानी सेना और तालिबानियों के बीच युद्ध छिड़ा हुआ है। तालिबान एक के बाद एक अफगानिस्तान पर रॉकेट दाग रहा है। इस संघर्ष की कहानी को अपने कैमरे में लगातार कैद कर रहे थे दानिश सिद्दीकी। कंधार में भी वो अफगानी सेना के साथ ही थे। युद्ध को अपने कैमरे में दर्ज कर रहे



प्रतिबंधित किए गए अकाउंट्स की संटीक +91 कोड वाले 20 लाख व्हाट्सएप अकाउंट भारत का कोड है। बता दें कि पूरी दुनिया में पर ये कार्रवाई हुई है। दुनिया भर में बैन किए ही हैं। गौरतलब है कि व्हाट्सएप पर कार्रवाई हो रही है। किसी भूल्यत्र के तहत अकाउंट के बंद होने का कारण बन सकते

## असम सरकार ने पेश किया नया कैटल बिल, कांग्रेस ने बताया मुस्लिम विरोधी

असम के हेमंत सरकार कैटल बिल पेश किया। द्वारा पेश किये गए इस की बिक्री पर टोक वहीं विपक्षी दल कांग्रेस उठाते हुए इस नए मुस्लिम विरोधी बताया बिस्ता शर्मा ने इस नए हिन्दू जैन, सिख वाले क्षेत्रों में बीफ की करना बताया है। साथ किलोमीटर के दायरे में पर टोक लगाना बताया



ने प्रदेश में नया असम सरकार नए बिल में बीफ लगायी गयी है। ने धर्म का सवाल कानून को है। वहीं हेमंत बिल का उद्देश्य समुदाय के रहने बिक्री को बंद ही मंदिर के पांच बीफ की बिक्री गया है। असम

सरकार द्वारा पेश किये गए इस नए बिल के अंतर्गत किसी भी व्यक्ति द्वारा मवेशियों का वध निषेध कर दिया गया है। इसके अनुमति के लिए किसी विशेष क्षेत्र के पंजीकृत पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा जारी आवश्यक प्रमाण पत्र लेना होगा। वहीं इस बिल के दूसरे नियम के 14 वर्ष से अधिक होने पर ही अधिकारी द्वारा बछिया या बछड़े के अपाहिज होने पर उसके वध के अनुसार केवल लड़सेंस रखे बूचड़खानों को वहीं यह कानून अधिकारियों को वैध दस्तावेज परिवहन पर भी टोक लगाएगा। हालांकि कृषि टोक नहीं होगी। वहीं इस कानून को तोड़ने पर जुमनिया या दोनों लग सकता है। वहीं अपराध जाएगा। दूसरी तरफ कांग्रेस के नेता देबब्रत हुए बिल में संशोधन की मांग की।

## दुनियाभर में बीएचयू आईआईटी की टीम ने लहूराया भारत का परचम, शेल इको मैराथन में मिला पहला स्थान!

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान की ऑटोमोबाइल इसर्च टीम एवरेटा ने पूरी दुनिया में भारत का नाम टौशन किया है। शेल इको मैराथन 2021 में एवरेटा ने पहला स्थान हासिल किया है। बता दें कि शेल इको मैराथन में दुनिया के 50 देशों की कुल 235 टीमों ने हिस्सा लिया था। दो सौ से ज्यादा टीमों के बीच बीएचयू आईआईटी की टीम एवरेटा पहले पायदान पर काबिज हुई है। शेल ने एवरेटा एनराशी पुरस्कार के ढप में दी है। निदेशक प्रो. प्रमोद कुमार जैन ने देश को गौरवान्वित करने के लिए और मैकेनिकल इंजीनियरिंग के कुमार ने शेल इको मैराथन के बारे इको-मैराथन विभिन्न अनुसंधान, विकास, रचनात्मकता टीमों का परीक्षण करने के लिए लींग के तहत शेल ने पूरे वर्ष विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। टीम एवरेटा अब गतिशीलता के भविष्य के लिए सक्रिय ढप से योजना बना रही है और एक स्वायत्त वाहन विकसित करने की योजना बना रही है।



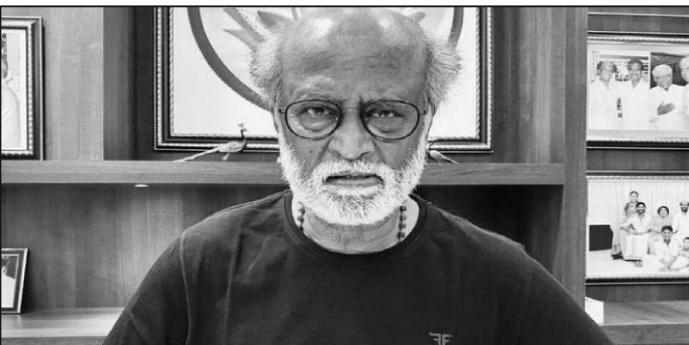
## गंगाजल की कोटोना रिपोर्ट आई नेगेटिव, गंगाजल से कोटोना के इलाज के दावों को मिली मजबूती!

कोटोना की दूसरी लहर को देखते हुए ये भी कोटोना का वायरस है। इसी को लेकर जांच की। बीएचयू के वैज्ञानिकों द्वारा सैम्पलिंग की गयी थी। इकट्ठा किये गए लखनऊ स्थित बीरबल साहनी इंस्टीट्यूट बता दे कि लखनऊ के इसी इंस्टीट्यूट में जिसमें गोमती की रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। खबर है, इंस्टीट्यूट में भेजे गए सैंपल की नेगेटिव आई है। एक महीने की जांच के बाद सामने आई रिपोर्ट में गंगा की कोटोना रिपोर्ट नेगेटिव आई है। बीएचयू के वैज्ञानिकों के अनुसार गंगाजल में पाए जाने वाले औषधीय गुण के कारण ही ऐसा संभव हुआ है। गंगाजल की कोटोना रिपोर्ट निगेटिव आने से वैज्ञानिकों ने राहत की सांस ली है। इसके बाद गंगाजल से कोटोना के इलाज की कहीं गयी बात और दावों को भी वैज्ञानिकों द्वारा अब मजबूती मिली है।



## अभिनेता राजनीकांत का बड़ा ऐलान, राजनीति को कहा अलविदा

दिग्गज अभिनेता राजनीकांत ने आखिरकार अपने राजनीतिक भविष्य पर बड़ा ऐलान कर दिया है। राजनीकांत के सियासी रणनीति की इस घोषणा के साथ ही सभी तरह की अटकलों पर पूर्ण विराम लग गया। राजनीकांत ने एक पत्र जारी किया, जिसमें उन्होंने दोबारा राजनीति में वापस नहीं आने की बात कही। राजनीकांत ने अपनी चिट्ठी के जरिए ऐलान किया कि वो अब दोबारा सियासत में वापसी नहीं करेंगे। इसी के



साथ उन्होंने अपने राजनीतिक दल राजनी मक्कल मंदराम को भी भंग कर दिया है। उन्होंने कहा है कि वो अपनी पार्टी के सचिवों और अन्य नेताओं से भी बात करेंगे। अभिनेता राजनीकांत ने अपनी राजनीतिक दल राजनी मक्कल मंदराम को राजनी रक्षीगर नरपानी मंदराम में बदलने की घोषणा की है। राजनी रक्षीगर नरपानी मंदराम के जरिए वो लोगों की सेवा करेंगे। यानी कि सामाजिक सेवा के काम में लगेंगे लेकिन आने वाले वर्क में कभी भी राजनीति में वापसी नहीं करेंगे।

## वेब सीरीज के बाने मनोज बाजपेयी पर भड़के सुनील पाल, बताया 'बदतमीज' और 'गिरा हुआ इंसान'

बीते कुछ दिनों से शिल्पा शेट्टी के पति और बिजनेसमैन राज कुंद्रा लगातार चर्चाएँ में हैं। उन पर पॉर्न फिल्मों को प्रदूस और पब्लिश करने का आरोप है। 19 जुलाई को हुई उनकी गिरफतारी के बाद से बॉलीवुड भी हैरान है। मामले पर अब तक तमाम लोगों के रिएक्शन्स आ चुके हैं और अब कमीडियन सुनील पाल ने भी इस पर अपनी प्रतिक्रिया दी है। हाल ही में

मीडिया से बातचीत के दौरान सुनील ने पुलिस को राज के एकेट का भंडाफोड़ करने के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा, 'जो हुआ, वह होना था और यह जठरी था। मैं यह इसलिए कह रहा हूं क्योंकि वेब सीरीज हो या दूसरी जगह, बड़े लोग वहां सेंसरशिप ना होने



का फायदा उठा रहे हैं। इन दिनों जो वेब सीरीज बन रही हैं, उन्हें घर पर नहीं देखा जा सकता है। यही नहीं, बातचीत के दौरान सुनील ने 'द फैमिली मैन 2' फैम एक्टर मनोज बाजपेयी तक का नाम छींच लिया और उन्हें गिरा हुआ इंसान बताया। कॉमेडियन ने कहा, 'मैं साफ्टॉयर पर कहना चाहता हूं कि मैं सच में मनोज बाजपेयी जैसे 3-4 लोगों से नफरत करता हूं। भले ही वह बड़े एक्टर हों लेकिन मैंने उनसे ज्यादा बदतमीज और गिरा हुआ इंसान नहीं देखा।'

# तेज प्रताप ने खुद को बताया 'सेकेंड लालू', बनाया नया फेसबुक पेज

राष्ट्रीय जनता दल यादव के बड़े बेटे तेज अंदाज देखने को मिला। लालू घोषित कर दिया है। लिए एक फेसबुक पेज शर्मा द्वारा बनाए गए इस वालों को तेज प्रताप दिया है। इसे लेकर उनका हो गया है, जिसमें वो मुख्यमंत्री नीतीश कुमार

नजर आ रहे हैं। अपने वीडियो में तेज प्रताप यादव ने कहा है कि वे जहां भी जाते हैं, लोग यही कहते हैं कि मेरा पूरा अंदाज लालू प्रसाद यादव की तरह ही है। इसके बाद 'सेकेंड लालू तेज प्रताप यादव' का फेसबुक पेज बनाया गया है। तेज प्रताप यादव ने इस पेज को अधिक से अधिक

पर निशाना साधते भी



## अफगानिस्तान ने भारत को दी चेतावनी

अफगानिस्तान सरकार ने भारत को चेताया है कि पाकिस्तानी आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा अपना ठिकाना पाकिस्तान से हटाकर अफगानिस्तान में बना रहा है। यह घटनाक्रम ऐसे समय पर हुआ है जब तालिबान ने अफगानिस्तान के आधे से ज्यादा इलाकों पर कब्जा कर लिया है। अब यह डर सताने लगा है कि अफगानिस्तान के उन इलाकों में आतंकी पैर जमा सकते हैं जहां पर सरकार का शासन नहीं है। डीएनए की रिपोर्ट के मुताबिक अफगान अधिकारियों ने भारत को इस बारे में सूचना दी है। इसमें खासतौर पर लश्कर और जैश-ए-मोहम्मद के बारे में जिक्र किया गया है। अधिकारियों ने बताया कि पाकिस्तान सभी अंतरराष्ट्रीय आतंकियों के गुटों को उत्तरी और दक्षिणी वजीरिस्तान से अपनी सरजर्मी से हटाना चाहता है और उन्हें अफगानिस्तान भेजना चाहता है। पाकिस्तान की कोशिश है कि ऐसा करके वह

एफएटीएफ के ग्रे लिस्ट से निकल जाए। इसी महीने ही अफगानिस्तान के राष्ट्रपति अशरफ गनी ने खुलेआम पाकिस्तान की आलोचना की थी और कहा था कि पिछले महीने ही 10 हजार जिहादी पाकिस्तान से

अफगानिस्तान में प्रवेश किए हैं। उन्होंने यह बयान पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान के सामने उज्जेकिस्तान में दिया था। यही नहीं एक अन्य बयान में गनी ने कहा कि तालिबान के आतंकी संगठनों लश्कर, जैश और अलकायदा के साथ गहरे संबंध हैं।



## ब्रिटिश कोर्ट ने विजय माल्या को किया दिवालिया घोषित

ब्रिटेन की अदालत ने विजय माल्या को दिवालिया घोषित करने के आदेश को मंजूरी दे दी। इससे अब भारतीय स्टेट बैंक के नेतृत्व में अन्य भारतीय बैंक माल्या की संपत्ति पर आसानी से कब्जा कर सकेंगे। इन बैंकों ने अदालत में इस संबंध में याचिका दाखिल की थी। बता दें कि माल्या की बंद हो चुकी किंगफिशर एयरलाइन द्वारा बकाया ऋण की अदायगी की मांग के लिए दुनिया भर में फ्रीजिंग आदेश का पालन करना पड़ रहा है।

वर्चुअल माध्यम से हुई सुनवाई में यह फैसला लिया गया। कानूनी फर्म टीएलटी एलएलपी और बैरिस्टर मार्सिया थोकरडेमियन ने सुनवाई के दौरान भारतीय बैंकों की ओर से पैरवी की थी। 65 वर्षीय व्यवसायी

माल्या इस बीच ब्रिटेन में जमानत पर ही रहे, जब तक कि उनके प्रत्यर्पण से संबंधित



कानूनी कार्यवाही पूरी नहीं हो जाती है। वहीं इस दौरान माल्या के वकील फिलिप मार्थल ने भारतीय अदालतों में कानूनी चुनौतियां जारी रखने तक आदेश को स्थगित करने की मांग की।

# पाकिस्तान की प्रधानमंत्री बनना चाहती हैं महविश ह्यात, दाऊद से जुड़ चुका है नाम!

अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम की गर्लफ्रेंड महविश ह्यात पाकिस्तान की प्रधानमंत्री बनने का ख्वाब देख रही हैं। एक इंटरव्यू में उन्होंने अपनी यह इच्छा जाहिर करते हुए कहा कि इमरान खान ने उन्हें प्रभावित किया है। महविश ने यह दावा भी किया कि इमरान खान जब से सत्ता में आए हैं, पाकिस्तान की स्थिति बेहतर हुई है। हालांकि, ये बात अलग है कि मुल्क की अधिकांश जनता इमरान सरकार की नाकामियों से आजिज आ चुकी है। 'ट्रिब्यून' की रिपोर्ट के अनुसार, एक स्थानीय मीडिया आउटलेट को दिए इंटरव्यू में दाऊद इब्राहिम की गर्लफ्रेंड महविश ह्यात ने इमरान खान को लेकर कहा कि अगर क्रिकेटर प्रधानमंत्री बन सकता है, तो अभिनेत्री भी पीएम बन सकती है। उन्होंने कहा कि वह देश में बदलाव लाने के लिए जल्द ही राजनीति में कदम रखना चाहती हैं, लेकिन वो वहां रुकना नहीं चाहतीं। महविश ने कहा कि वह इमरान खान की पार्टी पाकिस्तान तहीरी-ए-इंसाफ और उनकी राजनीति से प्रेरित हैं, क्योंकि उनके सत्ता में आने के बाद समाज और लोगों की सोच में सकारात्मक बदलाव आए हैं। पाक अभिनेत्री ने प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठने की इच्छा जाहिर करते हुए कहा कि राजनीति में आने से पहले इमरान खान क्रिकेटर थे। अगर एक क्रिकेटर प्रधानमंत्री बन सकता है तो एक अभिनेत्री भी बन सकती है।

## पाकिस्तानी दुल्हन ने पहना 100 किलो का लहंगा, लोग बोले- अजीबोगटीब हैं शौक

थारी के दिन को खास बनाने के लिए दूल्हा और दुल्हन हर तरीके से प्रयास करते हैं। खास कर अपने थारी के जोड़े को लेकर वो बेहद उत्सुक दिखते हैं। दूल्हा-दुल्हन कोशिश करते हैं कि वो कुछ इस तरह का पहने जो पहले कभी नहीं देखा हो या सुना हो। ऐसा ही कुछ पाकिस्तानी दुल्हन ने इस बार कर दिखाया है। पाकिस्तानी दुल्हन ने ऐसा हृषकर थारी का जोड़ा चुना है जो आज सुखियों में बनकर सामने आया है। पाकिस्तानी दुल्हन का एक वीडियो सोशल मीडिया पर देखा गया जिसमें उन्होंने खूबसूरत रेड रंग का लहंगा पहना हुआ है। इस



वीडियो के वायरल होने की वजह ये बनी कि लहंग में टेल डिजाइन थी जो कई फीट लंबी थी। खबरों की माने तो ये टेल डिजाइन और उसके वर्क के चलते इस लहंगे का वजन 100

किलों का हो गया था। सोशल मीडिया पर इस वीडियो को देखने वाले लोग हैरान दिखे हैं। लोगों ने कमेंट कर कहा कि इतने भारी लहंगे को दुल्हन ने कैसे पहन कर वॉक किया है तो वहीं, कई लोगों ने मजाक अंदाज में कहा कि पता नहीं चल रहा कि दुल्हन ने लहंगा पहना है कि लहंगे ने दुल्हन को। वहीं, कई लोग ये कहते भी दिखे कि अजीबोगटीब शौक है। बता दें, पाकिस्तानी दुल्हन का ये वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। यूजर्स इस वीडियो को तेजी से शेयर करते दिख रहे हैं। कुछ यूजर्स ने तो ये तक कह दिया कि फिल्मी दुनिया ने लोगों के शौक को बढ़ावा दिया है।

## विवादित डेमचोक इलाके के करीब दुनिया की सबसे ऊँची सड़क बनकर तैयार

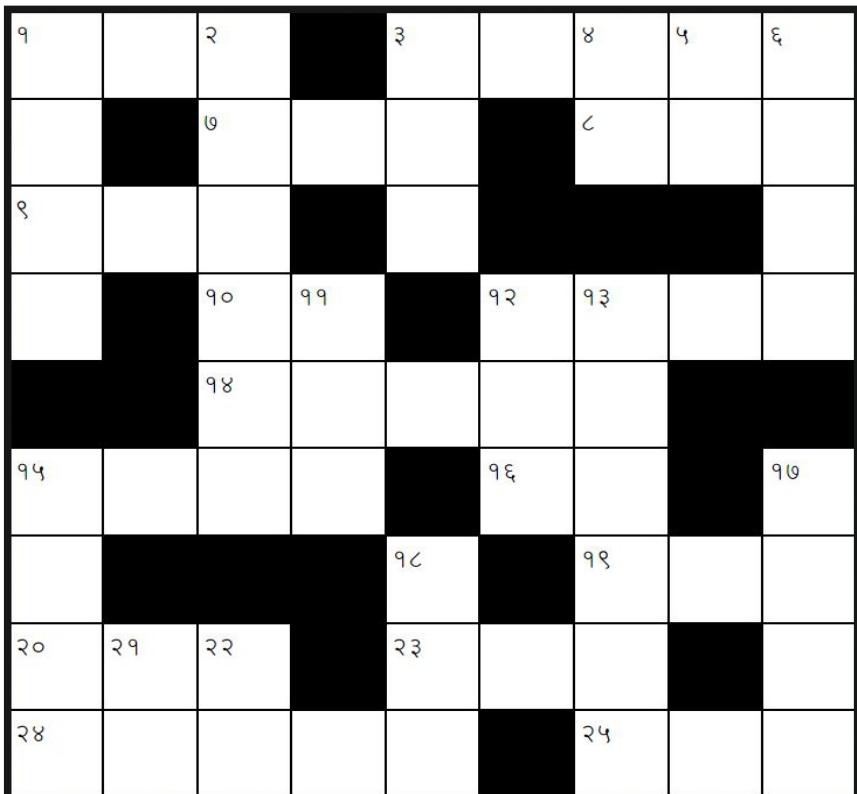
चीन से चल रहे तनाव के बीच भारत ने पूर्वी लद्धाख से सटी एलएसी के करीब दुनिया की सबसे ऊँची सड़क बनाने का दावा किया है। 19 हजार 300 (19,300 फीट) की ऊँचाई पर बॉर्डर गोड ऑर्गेनाइजेशन (बीआरओ) ने उमलिंग-ला दर्ते पर मोटर-मार्ग बनाकर पूरी कर ली है। ये सड़क भारत और चीन के बीच विवादित डेमचोक इलाके के करीब है। गुरुवार को बीआरओ ने उमलिंग-ला पास (दर्ते) पर सड़क बनाने का दावा किया। बीआरओ ने अपने

आधिकारिक व्हीटर एकाउंट पर उमलिंग-ला दर्ते की सड़क का वीडियो जारी कर कहा कि 'प्रोजेक्ट हिमांक' के दुनिया की सबसे ऊँची सड़क निर्माण बनाने का संकल्प देखिए। बीआरओ के मुताबिक, माइनस (-) 40 डिग्री सेल्सियस तापमान पर आदमी और मरीन दोनों की परीक्षा होती है... और बीआरओ के 'कर्मयोगियों' ने अपनी जान जोखिम में डालकर दुनिया के बेहद ही मुश्किल लक्ष्य को सफलता-पूर्वक पूरा किया। अभी तक लद्धाख की ही खरदूंगला सड़क (18,380 फीट) को दुनिया की सबसे ऊँची सड़क माना जाता था। लेकिन उमलिंग-ला दर्ते की सड़क अब दुनिया की सबसे ऊँची सड़क बन गई है। आपको बता दें कि उमलिंग-ला पास भारत और चीन के बीच लाइन ऑफ कंट्रोल (एलएसी) के विवादित डेमचोक इलाके के करीब है। इस पास के बनने से पूर्वी लद्धाख के डेमचोक और हैलेले जैसे इलाकों के बीच कनेक्टेविटी तो बढ़ ही जाएगी, साथ ही सेना की मूवमेंट भी तेजी से हो सकेगी।

# વર्ग-પદ્ધતી!

## ક્રાપ સે નીચે-

1. બેલબૂટે કા કામ (4)
2. સોચ સમજા કર (6)
3. શિક્ષા (3)
4. પરામર્થ, મંત્ર (2)
5. ભય (2)
6. લહુદાર નમૂને વાલે વર્ણન (4)
11. સોના (3)
12. મામા (3)
13. ખેત મેં સ્વતઃ ઉગે જંગલી ઘાસ-પાત (2,4)
15. ગર્ણેશ (4)
17. ગફન જંગલ (4)
18. શોર થારાબા (3)
21. તોતા (2)
22. ગીલા (2)

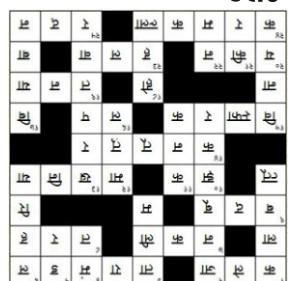


## બાએ સે દાએ-

1. યકૃત, છાતી (3)
3. નક્ષત્રોं કા સમૂહ  
કૃત્રિમ નક્ષત્ર કક્ષ (5)
7. કૃત્રિમ (3)
8. પ્રકાર (3)
9. દુર્ગધિ (3)
10. મછલી (2)
12. મકખન સે બના હુઅ (4)
14. વિષૈલા મેંઢક (2,3)
15. ફેલાને યા ફાડને વાલા (4)
16. અંજલિ, તેજી, ચમક,  
તલવાર કા શબ્દ (2)

19. બેટી (3)
20. વિશ્વાસ (3)
23. સીરા, સૂજી સે બની  
એક મિઠાઈ (3)
24. પત્તા ગોભી (5)
25. દાંત (3)

## ઉત્તર-



**મિનિલેશ પટેલ  
(સંરક્ષક)**



**રાજ શ્રીવાસ્તવ  
(સાપદક)**



**રમેશ ઉપાધ્યાય  
(વાટિષ્ઠ પત્રકાર)**



**વિકાસ શ્રીવાસ્તવ  
(પત્રકાર)**



**સુધીર કુમાર ગુપ્તા  
(વીડિયો એડિટર)**



**નિમાંશી પાંડેય  
(વીડિયો એડિટર)**



**ધીરેન્દ્ર પ્રતાપ  
(છાયાકાર)**



**રવિ પટેલ  
(કંટેન્ટ એડિટર)**



**પ્રિયાંશી શ્રીવાસ્તવ  
(કંટેન્ટ એડિટર)**



**આકાશ કુમાર  
(કંટેન્ટ એડિટર)**



**કુલ્દીપ કપૂર  
(સંવાદદાતા)**



**જય પાલ  
(સંવાદદાતા)**

# HOTEL UTSAV RESIDENCY

## FACILITIES:

- Take the Charge & Control of or Centralized Air Conditioned Rooms.
- For good picture quality & clear visibility, enjoy our 32" LCD Television.
- 24 Hours Room Service.
- Doctor on Call.
- Laundry Services.
- Medical Centre.
- Free Wifi.

## LOCATION:

BABA COMPLEX, BHU ROAD, LANKA,  
VARANASI

Email: [hotelutsavresidency@gmail.com](mailto:hotelutsavresidency@gmail.com)

Tel. 0542-2367080



## BABA RESTAURANT

The Restaurant serves everything from traditional Indian, Chinese and Continental Cuisine dishes.



go mmt  
GROUP  
make my trip | goibibo

# न्यूज़ बकेट



शिवपुर विधानसभा के शिवदशा गांव में नवलिवाहित ग्राम प्रधान से मुलाकात करते हुए न्यूज़ बकेट की टीम।



शिवपुर विधानसभा के झीको में ग्राम प्रधान प्रतिलिपि से गांव से जुड़ी मामलाओं पर चर्चा करते हुए।



गोहलिया विधानसभा के हटदत्तपुर गांव में नवलिवाहित प्रधान से मुलाकात कर जीतों की बधाई देते हुए।

इस चुप्पी भरे दौर में बेबाकी और बुलंदी से, मैं मिथिलेश पटेल  
(संरक्षक व प्रकाशक - न्यूज़ बकेट)  
अपनी टीम के साथ उठाऊंगा  
आपकी हर आवाज़!

मीडिया संबंधित किसी भी तरह  
की सहायता के लिए हमसे  
संपर्क करें।



8130078953



मिथिलेश पटेल

B.TECH, MBA (CARDIFF UNIVERSITY, UK), JOURNALISM(BHU)

[WWW.NEWSBUCKET.IN](http://WWW.NEWSBUCKET.IN)

f MITHILESHPATELOFFICIAL t MPATEL\_OFFICIAL c /C/MITHILESHPATEL i MITHILESH964

अपने आसपास व देश दुनिया की ताज़ातरीन ख़बरों के लिए  
न्यूज़ बकेट के यूदयूब चैनल को अभी सब्सक्राइब करें!